A Daily News Magazine
भोपाल
शुक्रवार, 25 अप्रैल, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 225, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

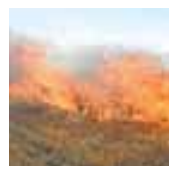

प्रसंगवश

भगवद् गीता को यूनेस्को से मान्यता मिलना गौरव का क्षण है

मीनाक्षी लेखी

कानूनी पेशे में जाने का फैसला करने से काफी वक्त पहले, बचपन में हमेशा हिंदी फिल्मों में कोर्ट रूम के सीन देखते हुए, मैं हमेशा एक वाक्य से मोहित होती थी। कटघरे में खड़ा किरदार कहता था, 'मैं गीता पर हाथ रखकर कसम खाता/खाती हूं कि मैं जो भी बोलूंगा/बोलूंगी सच कहूंगा/कहूंगी और सच के सिवा कुछ नहीं बोलूंगा/बोलूंगी।' भगवद् गीता में ऐसा क्या खास था कि यह एक व्यक्ति को केवल सच बोलने के लिए मजबूर करती है?

इस अविश्वसनीय किताब से मेरा लगाव मेरी किशोरावस्था तक जारी रहा। अपने कानूनी कॅरियर में ही मुझे समझ में आया कि गीता आज कितनी प्रासंगिक है- और क्यों इसे इतना पवित्र माना जाता है। इस साल, पहली हिंदू अमेरिकी कांग्रेस सदस्य तुलसी गबार्ड और सुहास सुब्रमण्यम और इसके बाद काश पटेल ने एफबीआई निदेशक के पद पर गीता पर हाथ रखकर शपथ ली। इसलिए, यह भारत नहीं हर भारतीय के लिए और विश्व के हिंदुओं के लिए गर्व का विषय है कि भगवद् गीता ने यूनेस्को के 'मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर' में जगह बनाई है।

मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टरः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाखों भारतीयों के गौरव को व्यक्त करते हुए खुशी ज़ाहिर की। उन्होंने लिखा, 'यूनेस्को के मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में गीता और नाट्यशास्त्र को शामिल किया जाना हमारी शाश्वत बुद्धिमत्ता और समृद्ध संस्कृति की वैश्विक मान्यता है।' यूनेस्को मानवता की साझा विरासत को रजिस्टर के ज़रिए प्रिज़र्व रखता है - यह दस्तावेज़ का कलेक्शन है जो मानव जाति की विरासत को संजो कर रखता है। ऐतिहासिक रूप से, भारत में ज्ञान को विद्वानों द्वारा संरक्षित किया जाता था। इसे मौखिक परंपरा के माध्यम से साझा किया गया, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक फैलता रहा। भगवद् गीता 700 श्लोकों वाली एक सजीव विरासत है, जिसके बारे में विद्वानों का मानना है कि इसकी रचना 200 से 400 ईसा पूर्व के बीच हुई थी। हालांकि, खगोलीय संदर्भों और हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान के आधार पर, यह सुझाव दिया जाता है कि यह ग्रंथ 3067 ईसा पूर्व या उससे पहले लिखा गया था। यह अर्जुन और कृष्ण के बीच एक आध्यात्मिक-दार्शनिक संवाद है, जो वेद व्यास के महाकाव्य महाभारत का हिस्सा है।

प्रबंधन ग्रंथः गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः (श्रीमद्भगवद्गीता के दूसरे अध्याय के 11वें श्लोक का अंश)

'बुद्धिमान कभी जीवित या मृत के लिए शोक नहीं करता।' इस श्लोक की व्याख्या प्रबंधन की दृष्टि से इस प्रकार की जा सकती है कि एक सच्चा नेता या प्रबंधक भावनात्मक उथल-पुथल या परिणामों से लगाव के आधार पर फैसला नहीं लेता है। श्लोक में, कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि जो आपके बस में नहीं, उसके लिए शोक मत कीजिए। इसी तरह, एक टीम लीडर को अस्थायी असफलताओं पर नहीं, बल्कि दीर्घकालिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करके रणनीतिक स्पष्टता बनाए रखनी चाहिए।

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।
(श्रीमद्भगवद्गीता के दूसरे अध्याय के 48वें श्लोक का अंश)

'हे धनंजय! (अर्जुन), आसक्ति को त्यागकर, सिद्धि और असिद्धि में समान रहकर कर्म करो; क्योंकि समत्व ही योग कहलाता है।' आधुनिक प्रबंधन में, यह माना जाता है कि एक सच्चा नेता सफलता या असफलता की चिंता नहीं करता। बल्कि, वह अपने द्वारा किए जाने वाले कार्यों के हो जाने पर फोकस करता है। असफलता के समय भी धैर्य रखना नेताओं के लिए एक महत्वपूर्ण गुण है और गीता हमें यही सिखाती है।

कानून की पुस्तकः सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत।
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम्।।
(श्रीमद्भगवद्गीता के तीसरे अध्याय के 25वें श्लोक का अंश)

'हे भारत (अर्जुन), जिस प्रकार मूर्ख व्यक्ति अपने कर्तव्यों के प्रति आसक्ति रखते हुए कार्य करते हैं, उसी प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति को भी संसार के कल्याण की इच्छा रखते हुए आसक्ति रहित होकर कार्य करना चाहिए।' भगवद्गीता निष्पक्षता और निष्पक्षता के महत्व पर जोर देती है। कानूनी संदर्भ में, यह सिद्धांत स्वतंत्र और निष्पक्ष न्यायपालिका की अवधारणा के अनुरूप है। न्याय की देवी की आंखे बंद हैं, जो कानूनी व्यवस्था की निष्पक्षता और गैर-पक्षपातपूर्णता पर जोर देती है।

संवैधानिक कानून में, यह इस अवधारणा के साथ संरेखित होता है कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले या प्रख्यात न्यायविदों द्वारा कानूनी व्याख्याएं निचली अदालतों और नागरिकों के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत बन जाती हैं। यह हमें याद दिलाता है कि जिन लोगों को सार्वजनिक पद, विधायी शक्ति या न्यायिक जिम्मेदारी सौंपी जाती है, उन्हें पूरी ईमानदारी और निष्पक्षता के साथ काम करना चाहिए।

खगोल विज्ञानः हाल ही में मुझे आईआईटी दिल्ली में न्यूक्लियर मेडिसिन प्रैक्टिशनर डॉ. मनीष पंडित द्वारा महाभारत की सटीक तिथि निर्धारण पर लेक्चर में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया था। मैं प्राचीन भारतीयों की सटीक खगोलीय क्षमताओं को जानकर दंग रह गई। श्लोकों का अनुवाद करके, डॉ. पंडित ने दिखाया कि भगवद गीता में डेटा को कैसे सटीक रूप से प्रस्तुत किया जाता है। डॉ पंडित ने प्रोफेसर नरहरि आचार के शोध पर काम किया, जो अमेरिका में मेम्फिस, टेनेसी यूनिवर्सिटी में फिजिक्स डिपार्टमेंट में पढ़ाते थे। महाभारत की सटीक तिथि निर्धारण के लिए, डॉ. पंडित ने प्लेनेटेरियम सॉफ्टवेयर की मदद से आचार के काम की पुष्टि की। महाभारत से 140 से अधिक खगोलीय संदर्भों का उपयोग करते हुए, आचार्य ने महाकाव्य युद्ध की शुरुआत की प्रभावी तिथि निर्धारित करने के लिए रात्रि आकाश का अनुकरण किया। उद्योग और भीष्म पर्व में वर्णित ग्रहों की स्थिति और ग्रहणों को संरेखित करके, उन्होंने पाया कि यह तिथि 22 नवंबर 3067 ईसा पूर्व थी।

भरत मुनि का नाट्यशास्त्रः नाट्यशास्त्र भारत में प्रदर्शन कलाओं का सबसे पुराना संकलन है, जो नटसूत्रों पर आधारित है, जिनके बारे में कहा जाता है कि वह प्रदर्शन कला या नाटक के ग्रीक काल से भी पहले के हैं। 'भारतीय रंगमंचः प्रदर्शन की परंपराएं' (1993) में, फार्ले रिकमंड ने अनुमान लगाया है कि नटसूत्र लगभग 600 ईसा पूर्व में लिखे गए थे। नाट्यशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र और धर्मशास्त्र को मिलाकर, नाट्यशास्त्र प्रदर्शन को एक आध्यात्मिक अनुष्ठान के रूप में देखता है जिसका उद्देश्य दर्शकों के भीतर गहरी भावनाएं जगाना है। यह कलाकारों को ईश्वर और मानव के बीच सेतु बनाने की रचनात्मक स्वतंत्रता देता है। भरत मुनि का नाट्यशास्त्र और भगवद गीता वाल्मीकि रामायण के महान पदचिह्नों पर चलते हैं।

यूनेस्को द्वारा हमारी विरासत के मूल्य को मान्यता दिए जाने से हमारा रुख सही साबित हुआ है। किसी सभ्यता के लिए उसकी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत उसकी जीवनरेखा होती है। अपने पूर्वजों की महान उपलब्धियों पर गर्व किए बिना विकसित भारत नहीं बन सकता।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

बाद मेरे भी ये जहां होगा
जाने फिर आदमी कहां होगा
मैंने जो बात हंस के टाली थी
उसका अंजाम जाने क्या होगा
मेरी आवाज हो न हो लेकिन
मेरा लिक्खा हुआ बयां होगा
चाहकर भी न कर सका जो कुछ
एक दिन देखना यहां होगा
मैं न आऊं नजर तो मत रोना
ख्वाब मेरा यहां- वहां होगा
उसने रोका जुलूस ताकत से
कल की तारीख में रवां होगा
आग के फूल खिलखिलायेंगे
खून मेरा जहां गिरा होगा।

- सुभाष राय

अब आतंकियों को मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है

● मधुबनी से पीएम मोदी ने दिया आतंकियों को कड़ा संदेश

कहा-आतंकियों को कल्पना से भी बड़ी सजा मिलकर रहेगी

मधुबनी (एजेंसी)। पहलगाम अटैक के बाद गुरुवार को बिहार के मधुबनी पहुंचे पीएम मोदी ने कहा- पहलगाम के दोषियों को मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है। आतंकियों को कल्पना से भी बड़ी सजा मिलकर रहेगी। आतंकी हमले में किसी ने अपना बेटा खोया, किसी ने भाई, किसी ने जीवन साथी खोया। इनमें से कोई बांग्ला बोलता था, कोई कन्नड़, कोई गुजराती था, कोई बिहार का लाल था। आज सभी की मृत्यु पर कारगिल से कन्याकुमारी तक हमारा आक्रोश एक जैसा है। पहलगाम आतंकी हमले पर पीएम मोदी ने दुनिया को मैसेज देने के लिए मंच से अंग्रेजी में कहा,हम उन्हें धरती के अंतिम छोर तक खदेड़ेंगे। आतंकवाद से भारत की आत्मा कभी नहीं टूटेगी। आतंकवाद को सजा मिलेगी।

गांव के विकास से ही देश का विकास होगा

पंचायती राज कार्यक्रम में शामिल हुए पीएम मोदी ने कहा कि, आज पंचायती राज दिवस के मौके पर पूरा देश मिथिला से जुड़ा है, बिहार से जुड़ा है। आज यहां देश के बिहार के विकास से जुड़े हजारों करोड़ों रुपए के प्रोजेक्ट का शिलान्यास और लोकार्पण हुआ है। आज राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर सिंह की पुण्यतिथि भी है। मैं उन्हें नमन कहता हूं। बिहार वो धरती है जहां से बापू ने अपने सत्याग्रह की शुरुआत की थी। उनकी सोच थी कि जब तक गांव का विकास नहीं होगा, तब तक भारत का विकास नहीं हो जाएगा।

पहलगाम हमले को लेकर हुई सर्वदलीय बैठक

विपक्ष ने कहा- आतंकी कैंप नष्ट करें, राहुल बोले- केंद्र के हर एक्शन को समर्थन

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम हमले को लेकर हुई सर्वदलीय बैठक हुई। केंद्र सरकार ने गुरुवार को माना कि पहलगाम हमले में सुरक्षा में चूक हुई है। सर्वदलीय बैठक के बाद संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने बताया कि आईबी और गृह मंत्रालय के अधिकारियों ने मीटिंग में विपक्षी नेताओं को सुरक्षा में हुई चूक के बारे में जानकारी दी। इस दौरान विपक्ष ने कहा कि वे सरकार के साथ हैं। विपक्षी सांसदों ने आतंकी कैंपों को नष्ट करने की मांग की। सरकार आतंक के खिलाफ कड़े कदम उठाए। सर्वदलीय बैठक के बाद राहुल गांधी ने बताया कि हर एक्शन पर सरकार को पूरा सपोर्ट है। सर्वदलीय बैठक दो घंटे चली। बैठक में पहलगाम हमले में मारे गए लोगों की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया।

पाकिस्तानी रेंजर्स ने पंजाब बॉर्डर पर बीएसएफ जवान पकड़ा

● एके-47 भी छीनी, आंखों में पट्टी बांधकर फोटो जारी की, फ्लैग मीटिंग से भी इनकार

अमृतसर (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ गया है। इसी बीच पाकिस्तानी रेंजर्स ने पंजाब के इंडो-पाक बॉर्डर पर बीएसएफ के जवान को हिरासत में लिया है। जिस दौरान उसके हाथ से एके-47 भी छीन ली गई। हिरासत में लेने के बाद वे जवान को अपने साथ ले गए। इसके बाद पाकिस्तानी मीडिया में जवान की 2 फोटो जारी की गई। एक फोटो में आंख पर पट्टी बांधी गई है तो दूसरी में बीएसएफ जवान एके-47 और पानी की बोतल के साथ खड़ा है। पकड़ा गया बीएसएफ जवान पीके सिंह मूल रूप से कोलकाता के जिला हुगली का रहने वाला है। अभी

तक उसे छोड़ा नहीं गया है। बीएसएफ के अधिकारी लगातार पाक रेंजर्स के संपर्कमें हैं। हालांकि, सूत्रों से पता चला है कि पाक रेंजर्स फिरोजपुर के हुसैनीवाला में फ्लैग मीटिंग के लिए नहीं आ रहे हैं। जिसके चलते बात सिरे नहीं चढ़ पाई है। उधर, अभी तक बीएसएफ की तरफ से कोई बयान भी नहीं आया है। दरअसल श्रीनगर से बीएसएफ की बटालियन-24 ममदोट में आई है। बुधवार की सुबह किसान अपनी कंबाइन मशीन लेकर खेत में गेहूं काटने गए थे। यह खेत फेंसिंग पर लगे गेट नंबर-208/1 के पास था। किसानों की निगरानी के लिए दो बीएसएफ जवान भी उनके साथ थे।

प्रदेश के सभी अंचलों में समान रूप से उद्यमिता का हो विस्तार : मुख्यमंत्री

प्रत्येक परिवार में कम से कम एक व्यक्ति को रोजगार का अवसर उपलब्ध कराए जाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों के माध्यम से प्रत्येक परिवार में कम से कम एक व्यक्ति को रोजगार अथवा स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जा सकते हैं। प्रत्येक जिले की परिस्थिति और उपलब्ध दक्षता के अनुसार गतिविधियों का विस्तार किया जाये। तेल घानी, मसाला-आटा चक्की, कोदो-कुटकी व अन्य मिलेट की प्र-संस्करण इकाई जैसे सूक्ष्म उद्योगों से युवाओं को जोड़ते हुए सम्पूर्ण प्रदेश में समान रूप से उद्यमिता का विस्तार किया जाये। इसमें खाद्य प्र-संस्करण इकाइयों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। कृषि उपज मंडियों को भी आधुनिक स्वरूप प्रदान किया जा रहा है। इसमें दूध, सब्जी आदि को सुरक्षित रखने की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाएगी, इसकी शुरूआत रतलाम से होगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यह निर्देश सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग की समीक्षा बैठक में दिए। समत्व भवन (मुख्यमंत्री निवास) में हुई बैठक में विभागी मंत्री श्री चैतन्य कुमार काश्यप, प्रमुख सचिव श्री राघवेन्द्र सिंह, प्रमुख सचिव वित्त श्री मनीष रस्तोगी तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विकसित भारत-विकसित मध्यप्रदेश की संकल्पना को साकार करने में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों की भूमिका महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से सूक्ष्म स्तर पर उद्यमिता को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। इस क्षेत्र में मध्यप्रदेश वर्तमान में देश में 7वें स्थान पर है, अगले वर्ष तक हमें प्रदेश को देश के श्रेष्ठतम राज्यों में स्थान दिलाना है। एमएसएमई के लिए उचित वित्त-व्यवस्था और अधोसंरचना, स्वरोजगार योजनाओं और स्टार्ट-अप ईको सिस्टम को सशक्त करते हुए बेहतर विपणन, निर्यात व ई-कॉमर्स प्लेटफार्म के माध्यम से इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए समय-सीमा निर्धारित कर गतिविधियां संचालित की जाए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वर्ष-2025 को उद्योग और रोजगार वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। दो माह के अंतराल में राज्य के अलग-अलग अंचलों में उद्योग-रोजगार दिवस का आयोजन किया जाए। पॉवरलूम सहित अन्य परम्परागत उत्पादन गतिविधियों को निरंतरता प्रदान करना आवश्यक है। इसी लिये विशेषज्ञों का सहयोग लेकर कौशल उन्नयन तथा तकनीकी दक्षता में सुधार के लिए क्षेत्रीय स्तर पर कैम्प आयोजित किये जाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नए उद्यमियों को प्रोत्साहित करना जरूरी है। अपनी पहल और नवाचार से सफलतापूर्वक गतिविधियां संचालित करने वाले उद्यमियों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाए। इससे अन्य लोग भी प्रेरित होंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नई दिल्ली में हुए भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में मध्यप्रदेश लघु उद्योग निगम को स्वर्ण पदक से पुरस्कृत होने पर बधाई दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उज्जैन में हुए विक्रमोत्सव से क्षेत्रीय स्तर पर व्यापार-व्यवसाय को प्रोत्साहन मिला है। प्रदेश के जिन क्षेत्रों में व्यापार मेले लगाए जा सकते हैं, उसका अध्ययन कर ट्रेड फेयर के लिए समेकित योजना बनाकर गतिविधियां संचालित की जाएं।

शुभम की पत्नी योगी से बोली-कड़ा बदला चाहिए

● दो दिन से पति की शर्ट पहनी, फिर उसी से लिपट गई ● सीएम योगी बोले-ताबूत में यह आखिरी कील बनेगी

लखनऊ (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए कानपुर के शुभम द्विवेदी का राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। चाचा नरेंद्र ने मुखाग्नि दी। पिता बगल में खड़े होकर रोते रहे। गुरुवार सुबह 11 बजे जब घर से ड्योढ़ी घाट के लिए शव यात्रा निकली तो पत्नी ऐशन्या चीख पड़ीं। पत्नी ने दो दिन से अपने पति की शर्ट पहन रखी थी। उन्होंने वह शर्ट उतारी, उसे सीने से लगाया, फिर फूट-फूटकर रोने लगीं। यह देखकर वहां मौजूद लोगों की

आंखें भर आई। इससे पहले, सीएम योगी ने शुभम को श्रद्धांजलि दी और घरवालों से बातचीत कर उन्हें ढांढस बंधाया। इस दौरान शुभम की पत्नी ने मुख्यमंत्री से कहा- आतंकियों ने मेरे सामने ही मेरे पति को गोली मारी। योगी जी, हमें कड़ा बदला चाहिए। आप इसका बदला लो। यह कहते हुए वह रोने लगीं। सीएम योगी ने कहा- यह हमला आतंकवाद के ताबूत पर आखिरी कील होगा। आतंकवादियों और उनके आकाओं को उसकी सजा जरूर मिलेगी।

● **एकटक पति की तस्वीर देखती रहीं पत्नी ऐशन्या-** सुबह जब पार्थिव शरीर घर लाया गया, तो बगल में शुभम की तस्वीर रखी गई। इस दौरान पत्नी ऐशन्या पति की फोटो को एकटक देखती रहीं। वह बार-बार तस्वीर पर हाथ फेरती रहीं। वह कहती रहीं- मुझे गोली क्यों नहीं मारी। अब मैं किसके लिए जिंदा रहूं। मां शव के बगल में बैठी थीं। वह बीच-बीच में चीख पड़ती थीं।

पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट ने बच्चे को कनाडाई मां को लौटाया

● कहा-विदेशी नागरिक भारत की अदालतों का गलत इस्तेमाल न करें, 'फोरम शॉपिंग' करार दिया

अमृतसर (एजेंसी)। पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट ने विदेशी नागरिकों को चेतावनी देते हुए अपने देश की अदालती प्रक्रिया से बचने के लिए भारतीय अदालतों का इस्तेमाल ना करने की बात कही है। यह टिप्पणी कोर्ट ने एक चार वर्षीय बच्चे की कस्टडी को लेकर चल रहे विवाद की सुनवाई के दौरान दी। यह याचिका एक कनाडाई महिला ने दाखिल की थी, जिसने अपने बेटे को भारत से वापस लाने की मांग की थी। न्यायमूर्ति मंजरी नेहरू कौल ने इस मामले की सुनवाई करते हुए यह अहम टिप्पणी की। दरअसल, इस बच्चे को बीते साल कनाडाई नागरिक पिता अपने साथ भारत ले आया था।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 22 °c
न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 25 अप्रैल 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

सिंधु का पानी रोकना युद्ध का ऐलान माना जाएगा

- बोला पाकिस्तान, भारत के खिलाफ किए कई बड़े ऐलान

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान में तनाव चरम पर पहुंचता दिख रहा है। भारत की जवाबी कार्रवाई के बाद अब पाकिस्तान ने भी गीदड़भभकी देने की कोशिश की है। इस्लामाबाद में राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की बैठक के बाद पाकिस्तान ने कई बड़े फैसलों का ऐलान किया है। इसमें भारत के साथ व्यापार पर रोक, वाघा बार्डर को बंद करना, भारतीय विमानों के लिए पाकिस्तानी हवाई क्षेत्र के इस्तेमाल पर रोक का फैसला

किया गया है। पाकिस्तान ने कहा है कि वह वाघा सीमा चौकी को तत्काल प्रभाव से बंद करेगा। इस मार्ग से भारत से सीमा पार सभी पारगमन, बिना किसी अपवाद के निलंबित रहेंगे। जो लोग वैध समर्थन के साथ सीमा पार कर चुके हैं, वे तुरंत लेकिन 30 अप्रैल 2025 से बाद में नहीं, वापस लौट सकते हैं। पाकिस्तान ने भारतीय नागरिकों को जारी किए गए सार्क वीजा छूट योजना के तहत सभी वीजा निलंबित कर दिए हैं और सिख धार्मिक तीर्थयात्रियों को छोड़कर उन्हें तत्काल प्रभाव से रद्द कर दिया है।

पहलगाम हमले के बाद अमृतसर में एनआईए की रेड

- 5 होटलों पर कार्रवाई, पाकिस्तान से संबंध होने की खबर, डॉक्यूमेंट जब्त

अमृतसर (एजेंसी)। पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद एनआईए ने अमृतसर में बड़ी कार्रवाई की है। एनआईए की टीम ने सुबह 5 बजे अमृतसर के क्वींस रोड पर स्थित पांच होटलों में छापेमारी की। छापेमारी में होटल योनिट, होटल ग्रैंड स्टार, होटल यूनिक, होटल रॉयल स्टार और होटल प्रीमियर को निशाना बनाया गया। एनआईए की टीम ने इन

सभी होटलों के रिकॉर्ड की जांच की और उन्हें जब्त कर लिया। कार्रवाई के दौरान पंजाब पुलिस की टीम भी मौके पर मौजूद रही। पुलिस ने बाहर से सुरक्षा व्यवस्था संभाली, जबकि एनआईए ने अंदर जाकर छापेमारी की। पंजाब पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि उन्हें सिर्फ सहयोग के लिए बुलाया गया था। सूत्रों के अनुसार, इन होटलों के पाकिस्तान से संबंध होने की जानकारी मिली थी। अमृतसर बॉर्डर एरिया होने के कारण यहां से पाकिस्तान में नशे की तस्करी की घटनाएं आम हैं। पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद इस इलाके में अलर्ट जारी किया गया है। एनआईए ने मीडिया से दूरी बनाए रखी और जब्त किए गए दस्तावेजों के बारे में कोई जानकारी साझा नहीं की है।

पहलगाम में मारे गए आईबी अफसर का अंतिम संस्कार

- बंगाल के झालदा में नम आंखों से विदाई, तिरंगे में लिपटा शव

सासाराम (एजेंसी)। पहलगाम में आतंकी हमले में मारे गए बिहार के मनीष रंजन का पार्थिव शरीर गुरुवार को पश्चिम बंगाल के झालदा लाया गया। अंतिम यात्रा में शव को तिरंगे से लिपटा रहा। सैकड़ों की भीड़ ने नम आंखों से उन्हें अंतिम विदाई दी। लोगों ने भारत माता जय के नारे भी लगाए। मनीष बिहार के सासाराम के रहने वाले थे। पिछले 2 सालों से आईबी के हैदराबाद ऑफिस में सेक्शन ऑफीसर के पद पर पोस्टेड थे। झालदा में ही मनीष के पिता मंगलेश मिश्रा हाई

स्कूल के प्रधानाध्यापक थे। कुछ साल पहले रिटायर हुए हैं। अब यहीं उनका परिवार रहता है। परिवार का कहना है कि उनकी पहली नौकरी एक्साइज इंस्पेक्टर के तौर पर थी, बाद में आईबी अफसर बने। हालांकि, सरकार की लिस्ट में उन्हें एक्साइज इंस्पेक्टर बताया गया है। मनीष का पार्थिव शरीर गुरुवार सुबह 9 बजे रांची एयरपोर्ट पहुंचा। एयरपोर्ट पर पूर्व सीएम बाबू लाल मरांडी ने मनीष को श्रद्धांजलि दी। इसके बाद पार्थिव शरीर सीआरपीएफ कैंप लाया गया, जहां जवानों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। उसके बाद परिवार एम्बुलेंस से पार्थिव शरीर को लेकर पश्चिम बंगाल स्थित झालदा के लिए निकल गए। परिजनों ने बताया कि मनीष की पत्नी जया बेसुध हैं। वो स्ट्रेचर पर हैं।

भगवान ने बचा लिया...

आतंकियों की गोली से बाल-बाल बचे 40 टूरिस्ट

- पहलगाम के रास्ते में हुई लैंडस्लाइडिंग से लेट हो गया ग्रुप
- साउथ इंडिया के एक दंपति ने बताया वहां का पूरा वाकया

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर के पहलगाम के आतंकी हमले में मरने वालों की तादाद ज्यादा होती, अगर 22 अप्रैल को सैकड़ों टूरिस्ट प्लान के मुताबिक बैसरन पहुंच गए होते। आंध्र प्रदेश के 40 टूरिस्टों को लैंड स्लाइडिंग के कारण प्लानिंग बदलनी पड़ी। बाद में उन्हें खबर मिली कि पहलगाम के आतंकी हमले में 26 लोगों की मौत हो गई है। अब उनका मानना है कि भगवान ने उनकी जान बचाने के लिए कश्मीर के नेशनल हाईवे पर लैंड स्लाइडिंग को जरिया बना दिया। रिपोर्ट के अनुसार आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम के वी एस आनंद और उनकी पत्नी

रत्नम भी टूरिस्ट ग्रुप में शामिल थे, जिन्हें पहलगाम जाने का मौका नहीं मिला। आनंद ने बताया कि अगर सब कुछ प्लानिंग के अनुसार होता, तो हम हमले के समय पहलगाम में होते। यह किसी चमत्कार से कम नहीं है। भगवान ने हमारे लिए कुछ और ही योजना बनाई थी। उन्होंने बताया कि 19 अप्रैल को हैदराबाद, तमिलनाडु और कर्नाटक के कुल 40 लोग दिल्ली से सात दिनों के लिए नॉर्थ इंडिया की यात्रा पर निकले थे। कटरा में वैष्णो देवी के दर्शन के बाद ग्रुप को 20 अप्रैल को श्रीनगर और 22 अप्रैल को पहलगाम पहुंचना था। लैंडस्लाइडिंग हुई राजमार्ग बंद हो गया।

प्रज्ञा, सत्येन्द्र, संजय, सुशांत को मिलेगा उत्कृष्ट सेवा पदक

किसी अधिकारी का नवाचार ऐसा नहीं जिससे पुलिस की कार्यप्रणाली में सुधार आया हो

भोपाल (नप्र)। पुलिस मुख्यालय ने वर्ष 2024 के अति उत्कृष्ट सेवा पदक के लिए 227 और उत्कृष्ट सेवा पदक के लिए 168 अधिकारियों और कर्मचारियों को चुना है। इनमें आईपीएस प्रज्ञा ऋचा श्रीवास्तव, सत्येंद्र कुमार

शुक्ला, संजय कुमार, सुशांत कुमार सक्सेना के नाम शामिल हैं।

उधर पीएचक्यू की डीजीपी डिस्क लिस्ट में यह बात सामने आई है कि मध्यप्रदेश में किसी भी जिले में पुलिस कप्तान, आईजी, डीआईजी या डीएसपी, टीआई स्तर के किसी अधिकारी ने कोई ऐसा प्रयोग नहीं किया है जो पुलिस की कार्यप्रणाली में सुधार लाने वाला साबित हुआ हो।

डीजीपी द्वारा दिए जाने वाले प्रशंसनीय सेवा और डिस्क सम्मान के लिए जारी सूची में यह बात भी सामने आई है कि प्राकृतिक आपदा के दौरान प्रशंसनीय काम करने वाले और खेल क्षेत्र में राज्य का प्रतिनिधित्व करते समय राष्ट्रीय स्तर पर पदक हासिल करने का काम भी कोई अधिकारी, कर्मचारी नहीं कर सका है। वहीं नक्सल विरोधी और दस्यु विरोधी अभियान के साथ अन्य कैम्पेन के दौरान भी विशेष उपलब्धि वाले काम एक साल में नहीं किए जा सके हैं। पुलिस मुख्यालय द्वारा महानिदेशक प्रशस्ति पत्र और डिस्क चयन को लेकर जारी की गई सूची में इन मामलों में किसी को भी प्रशस्ति पत्र और डिस्क देने के लिए नहीं चुना गया है।

पुलिस मुख्यालय द्वारा अनसुलझे प्रकरण सुलझाने के मामले में छिंदवाड़ा जिले की डीएसपी प्रियंका पांडेय, मंदसौर जिले के टीआई अमित सोनी को प्रशस्ति पत्र और डिस्क के लिए चुना गया है। इसके अलावा डीजीपी की ओर से तत्कालीन एसपी डायल 100 भोपाल (वर्तमान में सहायक महानिरीक्षक विधि पीएचक्यू) बीना सिंह, नरसिंहपुर जिले की गाडरवारा थाने की उपनिरीक्षक मनीषा लिल्हारे तथा पुलिस लाइन कटनी में कार्यरत कार्यवाहक निरीक्षक मंजू शर्मा को प्रशस्ति पत्र और डिस्क के लिए चयनित किया गया है।

अति उत्कृष्ट सेवा और उत्कृष्ट सेवा के लिए अफसरों के नाम तय

पुलिस मुख्यालय द्वारा जारी एक अन्य निर्देश में वर्ष 2024 के लिए केंद्रीय गृह मंत्रालय के निर्देश के आधार पर केंद्रीय गृहमंत्री का अति उत्कृष्ट सेवा पदक और उत्कृष्ट सेवा पदक के लिए अधिकारियों और कर्मचारियों का चयन किया है। इसमें अति उत्कृष्ट सेवा के लिए स्पेशल डीजी प्रज्ञा ऋचा श्रीवास्तव, डीआईजी प्रशासन सत्येंद्र कुमार शुक्ल के अलावा सहायक महानिरीक्षक, डीएसपी, टीआई, एसआई, एएसआई, प्रधान आरक्षक और आरक्षक स्तर के कर्मचारी चुने गए हैं। इसी तरह उत्कृष्ट सेवा पदक के लिए आईजी बालाघाट जोन संजय कुमार, आईजी चंबल सुशांत कुमार सक्सेना, डॉ आशीष आईजी इंटेलिजेंस, योगेश्वर शर्मा एसपी लोकायुक्त सागर, अनिल कुमार विश्वकर्मा एसपी लोकायुक्त उज्जैन, शैलेंद्र सिंह चौहान अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त क्राइम भोपाल, डीएसपी ग्वालियर राजेंद्र कुमार खांगर, डीएसपी खरगोन रामलाल शहिदे, उमाकांत चौधरी डीएसपी इंदौर ग्रामीण, महेंद्र रायपुरिया सहायक सेनानी 35वीं वाहिनी सशस्त्र बल मंडला समेत निरीक्षक और एसआई, एएसआई, प्रधान आरक्षक, आरक्षक स्तर के कर्मचारियों को चुना गया है।

मृतक की पत्नी केंद्रीय मंत्री पर भड़कीं

सीआर पाटिल सिर झुकाए सुनते रहे

सूरत (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार को आतंकवादी हमले में तीन गुजरातियों की जान चली गई। इनमें सूरत के शैलेशभाई कलथिया भी थे। गुरुवार को उनका अंतिम संस्कार किया गया। हजारों की भीड़ के बीच केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल उनके परिवार को सांत्वना देने

पहुंचे थे। इस दौरान उन्हें मृतक की पत्नी शीतलबेन का गुस्सा झेलना पड़ा। शीतलबेन ने आतंकी हमले के लिए सरकार और सुरक्षा एंजेसियों को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने केंद्रीय मंत्री से कहा, पहलगाम में कोई सेना, कोई पुलिस नहीं थी। मैं मदद के लिए चिल्लाती रही। इतने बड़ा पर्यटन स्थल होने के बावजूद कोई मेडिकल कैंप नहीं था। आप लोग जनता के टैक्स से हेलीकॉप्टर पर घूमते हैं।

सुप्रीम कोर्ट में गोधरा कांड पर सुनवाई 6-7 मई को

- गुजरात सरकार ने हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती दी है; दोषियों को फांसी की मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट में 6 और 7 मई को 2002 के गोधरा कांड मामले में गुजरात सरकार और दोषियों की याचिकाओं पर सुनवाई होगी। जस्टिस जेके माहेश्वरी और जस्टिस राजेश बिंदल की बेंच ने गुरुवार को इसकी जानकारी दी। गुजरात सरकार और दोषियों ने सुप्रीम कोर्ट में हाई कोर्ट के फैसले को चुनौती दी है।

राज्य सरकार ने जहां 11 दोषियों की फांसी की सजा को उम्रकैद में बदलने के खिलाफ अपील की है, वहीं कई दोषियों ने मामले में उनकी दोषसिद्धि को बरकरार रखने के फैसले को चुनौती दी है। 27 फरवरी 2002 में गुजरात के गोधरा स्टेशन पर साबरमती एक्सप्रेस के एस-6 डिब्बे में आग लगा दी गई थी। ट्रेन में अयोध्या से लौट रहे 59 तीर्थयात्रियों की मौत हो गई थी। इस हादसे के बाद पूरे गुजरात में दंगे भड़क उठे थे। हाई कोर्ट ने 11 दोषियों की सजा फांसी से उम्रकैद में बदली थी गोधरा कांड के बाद चले मुकदमों में करीब 9 साल बाद 31 लोगों को दोषी ठहराया गया था। 2011 में कोर्ट ने 11 दोषियों को फांसी और 20 को उम्रकैद की सजा सुनाई थी। बाद में अक्टूबर 2017 में गुजरात हाईकोर्ट ने 11 दोषियों की फांसी की सजा को भी उम्रकैद में बदल दिया था।

गुजरात हाई कोर्ट इस फैसले को चुनौती देते हुए सुप्रीम कोर्ट में कई अपीलें दायर की गई हैं। गुजरात सरकार ने फरवरी 2023 में कहा था कि वह उन 11 दोषियों के लिए मृत्युदंड की मांग करेगी, जिनकी सजा को हाई कोर्ट ने उम्रकैद में बदल दिया था।

जम्मू-कश्मीर में 24 घंटे में तीसरा एनकाउंटर, एक जवान शहीद

श्रीनगर (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले के बाद जम्मू-कश्मीर में सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच पिछले 24 घंटे में लगातार तीसरा एनकाउंटर चल रहा है। सुरक्षाबलों ने उधमपुर के डूडू बसंतगढ़ में कुछ आतंकियों को घेर लिया है। आतंकवादियों की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। मुठभेड़ में सेना का एक हवलदार शहीद हो गया। व्हाइट नाइट कॉर्प्स और एलजी मनोज सिन्हा ने एक्स पर रैंक 6 सीआरपीएफ के शहीद हवलदार झंटू अली शेख को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने लिखा - मुठभेड़ में फायरिंग के दौरान हमारे एक बहादुर को गंभीर चोटें आई और बाद में इलाज के समय उसकी मौत हो गई। एनकाउंटर ऑपरेशन अभी भी जारी है। उधर, जम्मू-कश्मीर में बांदीपुरा पुलिस ने लश्कर-ए-तैयबा के चार ओवर ग्राउंड वर्कर को गिरफ्तार किया है।

पुलिस ने बताया कि उन्हें जानकारी मिली थी कि आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े कुछ पुलिस और गैर स्थानीय लोगों पर हमला करने का मौका तलाश रहे थे। बांदीपोरा पुलिस ने तलाशी अभियान शुरू किया और जिले में विभिन्न स्थानों पर घेराबंदी की थी। नाका चेकिंग के दौरान मोहम्मद रफीक खांडे और मुख्तार अहमद डार को पकड़ा। तलाशी के दौरान उनके पास से अवैध हथियार गोला-बारूद बरामद किया गया।

हॉर्स राइडिंग के मोलभाव में बच गई मराठी पर्यटकों की जान

कहा-घोड़े पर होते तो मौत पक्की थी, बताया कैसे रहे खुशकिस्मत

श्रीनगर (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले से पहले मिनी स्विटजरलैंड माने जाने बैसरन में हॉर्स राइडिंग रेट काफी महंगा था। इसके बाद भी पर्यटक भी मोलभाव के बाद ही इसका लुत्फ लेते रहे। ऐसे ही मोलभाव के चक्कर में महाराष्ट्र के 28 और केरल के 23 लोग आतंकी हमले की चपेट में आने से बच गए। महाराष्ट्र के कोल्हापुर, सांगली, पुणे और रत्नागिरी से आए 28 पर्यटकों के ग्रुप ने तो हॉर्स राइडिंग के लिए हामी भी भर दी थी, मगर इतने सारे लोगों के लिए घोड़े जुटाने में काफी टाइम लग गया। इसी बीच गोलियों की आवाज आने लगी और वे वापस लौट आए। घोड़ों की वजह से उनकी जान बच गई। मुंहमांगी कीमत मांग रहे ऑपरेटरों के कारण केरल के पर्यटकों ने हॉर्स राइडिंग का ख्याल ही छोड़ दिया था। रिपोर्ट में बताया है कि कोल्हापुर, सांगली, पुणे और रत्नागिरी जिलों के 28 पर्यटकों का एक ग्रुप 17 अप्रैल को कश्मीर घूमने पहुंचा था। 22 अप्रैल को वह बैसरन घाटी पहुंच गए थे। कोल्हापुर के कागल तहसील के कपशी गांव के रहने वाले अनिल कुरणे ने बताया कि वहां घोड़े वालों ने पहले प्रति व्यक्ति 3,200 रुपये की डिमांड की थी। उन्होंने लगभग 15 मिनट तक घोड़े वालों से मोलभाव किया। जब किराया फिक्स हुआ तो 28 घोड़ों को इकट्ठा करने में 15 मिनट और लग गए।

जब वे घोड़ों पर बैठकर मुश्किल से 500 मीटर आगे बढ़े तभी उनके ग्रुप का ड्राइवर ड्राइवर भागता हुआ आया। वह चिल्ला रहा था 'रुको! उधर फायरिंग शुरू है, आगे मत जाओ।

अरब सागर में नौसेना ने आईएनएस सूरत से दागी मिसाइल

- पाकिस्तान से तनातनी के बीच भारत ने किया मिसाइल टेस्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले के बीच भारत ने मिसाइल परीक्षण किया है। भारतीय नौसेना के डिस्ट्रॉयर आईएनएस सूरत ने अरब सागर में समुद्र की सतह के पास टारगेट को निशाना बनाया। भारतीय नौसेना ने मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल दागी। भारतीय नौसेना के नवीनतम स्वदेशी मिसाइल विध्वंसक आईएनएस सूरत ने समुद्र में लक्ष्य को सफलतापूर्वक टारगेट किया। भारतीय नौसेना ने एक्स पोस्ट में इस बात की जानकारी देते हुए कहा कि ये हमारी रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने में एक और मील का पत्थर साबित हुआ। आत्मनिर्भर भारत के लिए गर्व का क्षण है। पाकिस्तान की ओर से मिसाइल टेस्ट की जल्दबाजी के बीच भारतीय ने ये कार्रवाई की है। ऐसी खबरें थी कि पाकिस्तान कोई मिसाइल परीक्षण कर सकता है। इससे ठीक पहले भारत ने सख्त मैसेज देने की कोशिश की है।

बार काउंसिल सदस्य ही बनेंगे वक्फ बोर्ड मेंबर

- एससी बोला-मुस्लिम होना अनिवार्य, 2 शर्तें लागू कीं

मणिपुर हाईकोर्ट के फैसले को सुप्रीम कोर्ट ने पलटा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को राज्य वक्फ बोर्ड में नियुक्ति को लेकर अहम फैसला सुनाया। कोर्ट ने कहा- राज्य बार काउंसिल का एक्टिव मेंबर ही राज्य वक्फ बोर्ड का सदस्य बन सकता है। जस्टिस एम.एम.सुंदरेश और जस्टिस राजेश बिंदल की बेंच ने फैसला सुनाते हुए कहा कि वक्फ बोर्ड का सदस्य बनने के लिए 2 अनिवार्य शर्तें पूरी करनी होंगी। पहली- व्यक्ति मुस्लिम समुदाय से हो। दूसरी- संसद, राज्य विधानसभा या बार काउंसिल के सदस्य के रूप में सक्रिय पद हो। सुप्रीम कोर्ट मणिपुर हाईकोर्ट के उस फैसले को गलत बताया, जिसमें हाईकोर्ट ने कहा था कि कानून में स्पष्ट नहीं है कि बार काउंसिल से बाहर होने पर वक्फ बोर्ड की सदस्यता भी समाप्त हो जाएगी। राज्य वक्फ बोर्ड का यह मामला मणिपुर के मोहम्मद फिरोज अहमद खालिद से जुड़ा था, जिन्हें फरवरी 2023 में मणिपुर वक्फ बोर्ड का सदस्य नियुक्त किया गया था। वह दिसंबर 2022 के चुनाव में बार काउंसिल का सदस्य बनने के बाद वक्फ बोर्ड में शामिल हुए थे।

उन्होंने उस व्यक्ति की जगह ली थी, जो बार काउंसिल का चुनाव हार गया था। हाईकोर्ट की सिंगल बेंच ने खालिद की नियुक्ति को वैध ठहराया था, लेकिन डिवीजन बेंच ने इस फैसले को पलटते हुए कहा था कि कानून में यह स्पष्ट नहीं है।

नई सोच के साथ जन सहभागिता के लिए हो प्रयास : राज्यपाल

● नागरिकों में पर्यावरण संतुलन के प्रति उत्तरदायित्व की भावना समय की जरूरत ● पर्यावरण संतुलन की चिंता के प्रति हर नागरिक संवेदनशील हो

राज्यपाल ने एप्को की 13वीं साधारण सभा की बैठक को किया संबोधित

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने कहा है कि जन सहभागिता के लिए नवाचार और नई सोच के साथ प्रयास किए जाने चाहिए। पर्यावरण संतुलन के लिए अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय स्तर पर लम्बे समय से काफी चिंतन हो रहा है। जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग अभी भी चुनौती बनी हुई है। आज आवश्यकता है कि हर व्यक्ति को पर्यावरण संतुलन के प्रति उत्तरदायी बनाने के समन्वित प्रयास किये जायें। पर्यावरण संतुलन की चिंता के प्रति समाज संवेदनशील हो। सामाजिक वातावरण हर व्यक्ति, समुदाय को पर्यावरण संतुलन के लिए सजग और सक्रिय बनाने वाला हो। बच्चे, बड़े सभी के दिल और दिमाग में अंकित हो कि पर्यावरण संतुलन और प्रदूषण नियंत्रण के लिए क्या किया जाना चाहिए, क्या नहीं किया जाना है।

राज्यपाल श्री पटेल राजभवन के सांदीपनि सभागार में पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन एप्को की 13वीं साधारण सभा की बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव, जल संसाधन डॉ. राजेश राजौरा, राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव श्री के. सी. गुप्ता भी मौजूद थे।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि सरकार के कार्यक्रमों में जन चेतना के जुड़ जाने की सफलता का प्रत्यक्ष प्रमाण इंदौर शहर है। लगातार 7 बार से देश का सबसे स्वच्छतम नगर की उपलब्धि नगर निगम के एकल प्रयासों का परिणाम नहीं है। यह नगर निगम और इंदौर के नागरिकों के सहभागी प्रयासों का प्रतिफल है। नागरिकों का स्वच्छता आग्रह और स्वच्छता के प्रति जन चेतना की सक्रियता का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने गुजरात के कच्छ इलाके के

ग्रामीण विद्यालय के शिक्षक दम्पती की छोटी सी पहल से होने वाले बड़े बदलाव का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि शिक्षक दम्पती ने नई सोच के साथ विद्यालय के वीरान परिसर में पौध-रोपण शुरू किया। विद्यालय के समस्त विद्यार्थियों को पौधे उपलब्ध कराये और परिसर में पौध-रोपण कराया। बच्चों से कहा कि जब वे स्कूल आए तो घर में सब्जियों को धोने वाले पानी को किसी डब्बे अथवा बोतल में लेकर आए। उनके द्वारा लगाए गए पौधे में वही पानी डाल दे। इस नई सोच ने कच्छ जैसे सूखे इलाके के विद्यालय के परिसर को हरा भरा करने का करिश्मा कर दिया है। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि समाज में बच्चों की वित्तीय सुरक्षा के लिए बैंकों में धन राशि जमा करते हैं। यह नहीं समझते कि यदि पर्यावरण नहीं रहेगा तो जीवन ही नहीं रहेगा। इस लिए संतान के भावी जीवन की वित्तीय सुरक्षा की चिंता से ज्यादा जरूरी पर्यावरण संतुलन की चिंता है। उन्होंने पर्यावरण संतुलन की चिंता को समाज की सर्वोच्च चिंता बनाने की दिशा में पहल की जरूरत बताई है। उन्होंने मिशन लाईफ और जलवायु परिवर्तन विषय पर प्रशिक्षित युवाओं से उनके द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी प्राप्त किए जाने के लिए कहा है। उन्होंने नदियों के आस-पास के उद्योगों और बस्तियों के कचरा निष्पादन प्रणालियों की गहन निगरानी की जरूरत बताई। उन्होंने कहा कि प्रदूषण को बढ़ाने और अनदेखी के मामलों में कड़ी कार्रवाई अत्यधिक गंभीरता के साथ की जाना चाहिए।

मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने बताया कि प्रदेश में जल गंगा अभियान के तहत पौध-रोपण कार्य के लिए वन विभाग को नोडल बनाकर कार्य किए जा रहे है। यह निर्णय किया गया है कि नर्सरी में तीन-चार वर्ष के तैयार पौधों का ही रोपण किया जाए। प्रदेश में आगामी दो-तीन वर्षों में शत प्रतिशत बड़े पौधों का रोपण होने लगेगा। उन्होंने अधिकारियों को एस.एल.सी.टी.सी. के तहत किए जा रहे कार्यों की मॉनिटरिंग रिपोर्ट राजभवन को नियमित अंतराल पर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए है।

अपर मुख्य सचिव श्री डॉ. राजेश राजौरा ने बताया कि जल संसाधन विभाग द्वारा कान्ह नदी के दूषित जल के डायवर्जन हेतु कान्ह क्लोज डक्ट डायवर्जन प्रोजेक्ट के तहत 30 प्रतिशत कार्य पूरा हो गया है। क्षिप्रा नदी को अविरल-निर्मल बनाए जाने का कार्य भी प्रगति पर है। उन्होंने बताया कि देश की सबसे सुरक्षित चंबल नदी की सुरक्षा के लिए पार्वती कालीसिंध परियोजना में प्रावधान किए गए है। बेतवा नदी के जल प्रवाह को बढ़ाने और सोन नदी को प्रदूषण मुक्त बनाने के कार्य भी किए जा रहे है।

इस अवसर पर प्रमुख सचिव पर्यावरण डॉ. नवनीत मोहन कोठारी, सचिव जल संसाधन श्री जॉन किंग्सली, सचिव वित्त श्री लोकेश कुमार जाटव, सचिव वन श्री अतुल मिश्रा, आयुक्त नगर तथा ग्राम निवेश श्री श्रीकांत बनोठ, आयुक्त मनरेगा श्री अविप्रसाद, पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन कार्यपालक निर्देशक श्रीमती उमा माहेश्वरी और साधारण सभा के सदस्यगण, विशेषज्ञ उपस्थित थे।

बीजेपी नेत्री की दुकानों में आग

बोलीं- नल से आग बुझाने का प्रयास करते रहे पुलिस जवान; 15 लाख का माल खाक

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बागसेवनिया नई बस्ती में किराना और मोबाइल शॉप में आग लग गई। हादसा बीती रात 1:30 बजे हुआ है। आग का कारण शार्ट सर्किट बताया जा रहा है। दोनों दुकानें बीजेपी नेत्री शोभा पांडे की हैं। इन दुकानों का संचालन उनका बेटा करता है। शोभा का आरोप है कि रहवासी और पुलिस जवान काफी देर तक आग पर काबू पाने का प्रयास करते रहे।

मोहल्ले के लोगों ने पाइप से पानी डालकर आग को बुझाने का प्रयास किया। जब तक फायर ब्रिगेड आई, दुकानें जलकर खाक हो चुकी थीं। दमकलकर्मियों ने करीब आधे घंटे में आग पर काबू पा लिया था। पुलिस आग के कारणों की जांच कर रही है। शोभा पांडे के मुताबिक नई बस्ती में किराना दुकान और मोबाइल-फोटो कॉपी की दुकान का संचालन करती हैं। रात को करीब 1:30 बजे मोहल्ले वालों ने आग लगने की सूचना दी। जब दुकान पर पहुंचे तो तेज लपटें उठ रही थीं। आस पास के लोग बाल्टी में पानी भरकर और नल से पानी डालकर आग को बुझाने के प्रयासों में जुट गए। लेकिन आग बढ़ चुकी थी, काबू में नहीं आई। इस बीच पुलिस मौके पर पहुंच गई, जवानों ने रहवासियों के साथ मिलकर आग को बुझाने का प्रयास किया। लेकिन फायर ब्रिगेड करीब एक घंटे बाद मौके पर आई, तब तक दुकान का अधिकांश सामान जलकर खाक हो गया था। बचा हुआ सामान आग बुझाने के लिए जो पानी डाला गया उससे खराब हो गया।

निर्वाचन शाखा प्रभारी के घर चोरी का प्रयास

भोपाल (नप्र)। बैरसिया तहसील में रहने वाले निर्वाचन शाखा के प्रभारी मनोज शर्मा के घर चोरी का प्रयास हुआ। आंगन में खड़ी बाइक को चार बदमाशों ने चोरी करने की कोशिश की। फरियादी के ललकारने पर आरोपी भाग निकले। पूरा घटनाक्रम सीसीटीवी कैमरों में कैद हुआ है। जानकारी के मुताबिक बुधवार रात पहली बार रात करीब 9:30 बजे और फिर 10:30 बजे, चोरों ने उनके घर के बाहर खड़ी दो बाइक चुराने की कोशिश की। हलचल और आहट सुनते ही मनोज शर्मा ने तुरंत प्रतिक्रिया दी और बाहर निकलकर चोरों को ललकारा। तब आरोपी अपनी बाइक छोड़कर भाग निकले। इस बाइक के रजिस्ट्रेशन के आधार पर पुलिस आरोपियों तक पहुंचने का प्रयास कर रही है। वहीं, सीसीटीवी फुटेज में चोरों के चेहरे कैद हुए हैं। आरोपियों की बाइक को फरियादी ने पुलिस के हवाले कर दिया है।

ब्लास्ट की साजिश के आरोपी को जयपुर ले गई एनआईए

बीस दिन से भोपाल की हाई सिक्योरिटी जेल में था बंद

भोपाल (नप्र)। जयपुर बम ब्लास्ट मामले के आरोपी फिरोज को गुरुवार सुबह एनआईए की टीम जयपुर ले गई। फिरोज पिछले 20 दिनों से भोपाल सेंट्रल जेल के हाई सिक्योरिटी सेल में बंद था। जयपुर में 2022 में ब्लास्ट की साजिश में शामिल अलसुफा संगठन के खजांची फिरोज उर्फ सब्जी को रतलाम पुलिस ने 3 अप्रैल को गिरफ्तार किया था। एनआईए मार्च 2022 से उसकी तलाश में थी। उस पर 5 लाख का इनाम रखा था। हालांकि आरोपियों के पकड़ में आने के चलते

जयपुर दहलाने की कोशिश को नाकाम कर दिया गया था। फिरोज रतलाम में रहने वाली बहन रेहाना के घर ईद मनाने आया था। रेहाना भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा जिलाध्यक्ष मंसूर जमादार के भाई मसरूफ खान की पत्नी है। वह जिस मकान में रहती हैं, उसी मकान के आगे वाले हिस्से में भाजपा नेता मंसूर भी रहते हैं। फिरोज ने इसी क्षेत्र में बुर्का पहनकर छिपने के लिए कई बार घर बदले। आरोपी को छिपाने में फिरोज के बेटे व भतीजे की भूमिका के बारे में पुलिस जानकारी निकाल रही है।

कैसे खुला राज?

30 मार्च 2022 को राजस्थान के निंबाहेड़ा में पुलिस ने एक संदिग्ध कार रोकी। तलाशी में विस्फोटक, टाइमर, सेल मिले। कार में बैठे रतलाम निवासी जुबेर पठान, सैफुल्लाह खान और अल्तमश को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में आमीन फावड़ा, आमीन हाजी, मजहर, इमरान पठान, यूनुस साकी, इमरान मटका, आकिब महाराष्ट्र, फिरोज उर्फ सब्जी का नाम सामने आया। इसके बाद एनआईए ने 10 लोगों को गिरफ्तार कर लिया था।

भोपाल जिपं उपाध्यक्ष-सदस्य भूख हड़ताल पर बैठे

● अधूरी नल-जल योजनाओं को लेकर नाराजगी; जिपं बैठक में दी थी चेतावनी

भोपाल (नप्र)। भोपाल जिले में अधूरी नल-जल योजनाओं को लेकर गुरुवार को जिला पंचायत उपाध्यक्ष मोहन सिंह जाट, सदस्य विनय मेहर, चंद्रेश राजपूत, देवकुवर हाड़ा समेत सुरेश राजपूत, अनिल हाड़ा और विनोद राजोरिया जिला पंचायत परिसर में भूख हड़ताल पर बैठ गए हैं। जाट ने चार दिन पहले कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह को इसकी जानकारी दे दी थी। जनप्रतिनिधियों के प्रदर्शन से जिम्मेदार अफसरों की सांसें फूल गई हैं। बीती रात वे जनप्रतिनिधियों को मनाने में जुटे रहे। अधूरी योजनाओं के कारण गांवों की बड़ी आबादी गर्मी में पानी के लिए परेशान हो रही है। इसे लेकर जिला पंचायत की बैठक में मुद्दा भी उठ चुका है, पर पीएचई विभाग के जिम्मेदार नहीं जागे। इस कारण जिपं उपाध्यक्ष जाट ने कलेक्टर को पत्र लिखा था। जिसमें कहा था कि जिपं ऑफिस परिसर में ही 24 अप्रैल से भूख हड़ताल पर बैठूंगा। हालांकि, कलेक्टर को पत्र लिखते ही सीईओ ईला तिवारी ने नल-जल योजनाओं के बारे में 3 दिन में रिपोर्ट मांग ली थी। उन्होंने जनपद पंचायत फंदा एवं बैरसिया अंतर्गत स्वीकृत, हस्तांतरित, ट्रायलरन, प्रगतिरत नल-जल योजनाओं के निरीक्षण, जांच कराने के लिए टीमें बना दीं।

सदस्य भी भूख हड़ताल पर बैठे

जिपं उपाध्यक्ष जाट ने कलेक्टर को पत्र लिखा कि 27 मार्च को साधारण सभा की बैठक हुई थी। इसमें जल जीवन मिशन योजना के तहत विभागीय अधिकारियों को 15 दिन में अधूरी नल-जल योजनाओं को पूरा करने को कहा गया था, लेकिन 23 अप्रैल का दिन भी बीत गया। बावजूद अब तक न तो कोई रिपोर्ट दी गई और न ही गांवों में पेयजल संकट खत्म हुआ है।

इन गांवों में पानी की परेशानी- वर्तमान में खजूरी, गुनगा, कनेरा, शाहपुरा, देवपुरा, गोलखेड़ी, कोठार, चंदेरी, दुपड़िया, कालापीपल, बागापुरा, तारा सेवनिया, आचारपुरा, करारिया, सेमरीखुर्द, खितवास, चाचाहेड़ी, गोंदीपुरा, परवलिया, बरेलाखेड़ा, लहारपुरा समेत कई पंचायतों में लोग पानी के लिए परेशान हो रहे हैं।

मोबाइल टॉवर से गिरे युवक की मौत

भोपाल (नप्र)। राजधानी के एमपी नगर इलाके में लगभग दस दिन पहले मोबाइल टावर से गिरकर गंभीर रूप से घायल युवक की इलाज के दौरान मौत हो गई। मृतक की पहचान 30 वर्षीय छोटू बाबू नंदन, निवासी शांति नगर, गोविंदपुरा के रूप में हुई है। पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए हमीदिया अस्पताल भेजा, जिसके बाद लाश परिजनों को सौंप दी गई। हादसा 15 अप्रैल की शाम को हुआ था। छोटू बाबू एमपी नगर जोन-2 स्थित एक निजी कंपनी के मोबाइल टावर पर चढ़ गया था। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, युवक को टावर पर चढ़ता देख मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई थी। सूचना मिलते ही पुलिस और नगर निगम की रेस्क्यू टीम मौके पर पहुंची। लेकिन युवक को सुरक्षित उतारने से पहले ही वह लगभग 50 फीट की ऊंचाई से नीचे गिर गया। गंभीर रूप से घायल युवक को तत्काल एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। यहां बुधवार को इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है। यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि युवक किन परिस्थितियों में टावर पर चढ़ा था।

सौरभ शर्मा और शरद जायसवाल की जमानत याचिका खारिज

ईडी कोर्ट में दोनों पक्षों के बीच बुधवार को हुई थी बहस

भोपाल (नप्र)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की कोर्ट में गुरुवार को आरटीओ के पूर्व कॉन्स्टेबल सौरभ शर्मा और उसके सहयोगी शरद जायसवाल की जमानत याचिका खारिज हो गई। मामले में सौरभ की कंपनी अविरल फिशरिस भी केस में पार्टी है। कोर्ट ने कंपनी की भी जमानत रिजेक्ट कर दी गई है। विशेष न्यायाधीश सचिन कुमार घोष की अदालत में इस जमानत याचिका पर बुधवार को सुनवाई हुई। इस दौरान सौरभ शर्मा की मां और ईडी की टीम अदालत में मौजूद रहीं। सौरभ की ओर से एडवोकेट दीपेश जोशी और सौरभ के सहयोगी शरद जायसवाल की ओर से अधिवक्ता रजनीश बरैया ने सोमवार को जमानत याचिका दायर की थी।

ईडी के वकील विक्रम सिंह ने सौरभ और शरद के कृत्य को गंभीर बताते हुए उनकी जमानत का विरोध किया था। वहीं, सौरभ के वकील दीपेश जोशी ने ईडी की कार्रवाई को काल्पनिक बताते हुए सभी आरोपों को गलत बताया और जमानत दिए जाने की मांग की थी। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद अदालत ने फैसला गुरुवार तक के लिए सुरक्षित रख लिया था।

सौरभ के वकील बोले- ईडी के पास कोई सबूत नहीं

कोर्ट में एडवोकेट दीपेश जोशी ने बताया कि मेरे मुवक्किल सौरभ शर्मा के खिलाफ ईडी के पास कोई सबूत नहीं है। दुबई का वीजा लेने के लिए उन्होंने दुबई की एक नामी कंस्ट्रक्शन कंपनी के ब्रोशर का इस्तेमाल किया था। इसी ब्रोशर के आधार पर सौरभ को 150 करोड़ रुपए के विला का मालिक बताया गया।

जबकि विला कहां है और कौन-सा है, इस बारे में ईडी के पास कोई प्रमाण नहीं है। सोने और कैश

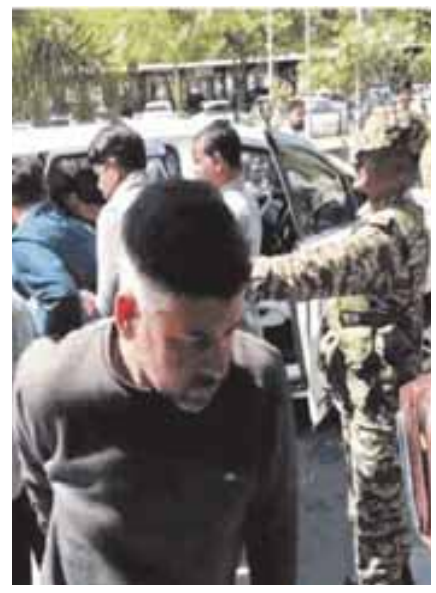

से भरी जिस कार को सौरभ की बताया जा रहा है, वह उनके नाम पर पंजीकृत ही नहीं है। मनगढ़ंत आरोपों के आधार पर मेरे मुवक्किल को जेल में रखा गया है, जबकि हमें लोकायुक्त से जमानत मिल चुकी है।

मां और पत्नी को मिल चुकी है जमानत- 9 अप्रैल को ईडी की कोर्ट से सौरभ की मां उमा शर्मा, पत्नी दिव्या शर्मा, जीजा विनय आसवानी और जबलपुर निवासी साले रोहित तिवारी को जमानत मिल गई थी। 18वें अपर सत्र एवं विशेष न्यायाधीश सचिन कुमार घोष की अदालत से 10 लाख रुपए के बॉन्ड पर जमानत दी गई थी। अब जमानत याचिका खारिज होने पर सौरभ शर्मा, उसके सहयोगी शरद और चेतन की पेशी 5 मई को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए कराई जाएगी।

भोपाल के भेल में आग...5 घंटे बाद भी धधकती रही

15 किमी दूर से दिखा धुएं का गुबार; 30 से ज्यादा दमकल-टैंकर काबू पाने में जुटे थे

भोपाल (नप्र)। भोपाल में गुरुवार को भेल (भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड) के गेट नंबर 9 के पास कैंपस के अंदर वेस्ट मटेरियल में आग लग गई, जो 5 घंटे बाद भी पूरी तरह से काबू में नहीं आई है।

गेट से 200 मीटर दूर ही वॉच टॉवर के पास तेज धमाके भी हुए। बताया जा रहा है कि अंदर ऑयल की टंकियों में ब्लास्ट हुआ है। हालांकि, भेल प्रबंधन का कहना है कि सूखे पेड़ और कचरे की वजह से तेज आवाजें आई। यहां ऑयल नहीं रखा था।

इधर, आग की चपेट में हजारों पेड़-पौधे आ गए। 30 से ज्यादा दमकलें और पानी के टैंकर आग पर काबू पाने में जुटे रहे। मंडीदीप से भी दमकल बुलाई गई। आग इतनी भीषण थी कि 15 किमी दूर से भी धुएं का गुबार दिखा।

सुबह करीब 11.30 बजे आग लगी थी। हालांकि दोपहर 2 बजे तक आग को फैलने से रोक लिया गया, लेकिन अभी भी रह-रहकर आग सुलग रही है। अभी भी आसमान में धुआं उठता दिख रहा है। फिलहाल आग लगने के कारणों का खुलासा नहीं हुआ है।

कलेक्टर-एसडीएम मौके पर मौजूद थे- अभी किसी को अंदर नहीं जाने दिया जा रहा है। जिस जगह आग लगी है, वह गेट नंबर 9 से करीब 200 मीटर दूर है। हालांकि फैक्ट्री उससे काफी दूर है, लेकिन

अंदर भी हड़कंप की स्थिति है। आग लगने की सूचना मिलते ही कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह, गोविंदपुरा एसडीएम रवीश श्रीवास्तव समेत कई अफसर पहुंचे।

आग बाहर निकल जाती तो बड़ा हादसा हो सकता था- मौके पर पहुंचे मंत्री विश्वास सारंग ने कहा कि पूरे एरिया में पेड़ लगे हैं। जंगल जैसा एरिया है। फैक्ट्री का कोई पॉर्ट या टाउनशिप नहीं है। मौके पर दमकलें पहुंची और आग पर काबू पाने में लगी। यह हिस्सा बेतरतीब जंगल जैसा है। भोपाल कलेक्टर से कहा है कि इसे लेकर भेल प्रबंधन से बात करें और सुरक्षा के इंतजाम का कहे। यदि यह आग बाहर निकल जाती तो शहर में बड़ा हादसा हो सकता था।

पहुंचे मंत्री सारंग, सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाने और अग्नि दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के दिए निर्देश

भोपाल के भेल परिसर स्थित गेट नंबर 9 के पास गुरुवार को वेस्ट मटेरियल में अचानक आग लगने की घटना की जानकारी मिलते ही सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग तुरंत मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायज़ा लिया। मंत्री श्री सारंग ने मौके पर मौजूद प्रशासनिक अधिकारियों, भेल प्रबंधन और फायर ब्रिगेड अधिकारियों के साथ आवश्यक चर्चा कर राहत एवं बचाव कार्य की समीक्षा की। उन्होंने फायर ब्रिगेड की त्वरित कार्रवाई की सराहना करते हुए आवश्यकता अनुसार आसपास के क्षेत्रों से भी अतिरिक्त फायर यूनिट्स बुलाने के निर्देश दिए। मंत्री श्री सारंग ने अधिकारियों से कहा कि ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए सख्त कदम उठाए जाएं। उन्होंने विशेष रूप से भेल परिसर के हरियाली युक्त क्षेत्रों में सुरक्षा इंतज़ाम बढ़ाने पर बल दिया और निर्देशित किया कि इन क्षेत्रों में नियमित निरीक्षण, कचरा प्रबंधन और सूखी घास/झाड़ियों की सफाई की उचित व्यवस्था की जाए। उन्होंने कहा कि भेल प्रशासन और जिला प्रशासन को समन्वय के साथ काम करते हुए उन भूमियों की सुरक्षा सुनिश्चित करें, जिनका वर्तमान में कोई उपयोग नहीं हो रहा है। मंत्री श्री सारंग ने यह भी कहा कि इन क्षेत्रों का समुचित रखरखाव हो और किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए।

संपादकीय

क्या अश्वेत होंगे नए पोप ?

रोमन कैथोलिकों के सर्वोच्च धर्माध्यक्ष फादर पोप फ्रांसिस के निधन से दुनिया भर से कैथोलिक ईसाई गमगीन हैं, उन्हें श्रद्धांजलि के बतौर भारत सहित कई देशों ने राष्ट्रीय शोक घोषित किया है। उनका अंतिम संस्कार ईसाई विधि विधान के साथ होगा। पोप फ्रांसिस का निधन 88 वर्ष की आयु में ब्रेन स्ट्रोक से हुआ। लैटिन अमेरिका से आने वाले वो पहले और 266वें पोप थे। इसी के साथ नए पोप के नामों की अटकलें भी शुरू हो चुकी हैं। नए पोप का चुनाव दुनिया भर के रोमन कैथोलिक चर्चों के 135 कार्डिनल मिलकर करेंगे। ऐसे में सवाल यह है कि क्या रोमन कैथोलिक चर्च अब किसी गैर यूरोपीय को पोप बनाकर नया इतिहास रचेगा? क्या पहली बार गरीब और अश्वेत देशों के पोप को सर्वोच्च जिम्मेदारी मिल सकती है? चर्चाएं है कि नया पोप अफ्रीकी महाद्वीप से होगा? इसके पीछे कारण हाल के वर्षों में कैथोलिक आबादी का तेजी से होता विस्तार है। यानी पूरी दुनिया में जितने कैथोलिक लोगों की संख्या बढ़ी है, उसमें आधे सिर्फ़ अफ्रीका से आते हैं। आज दुनिया के 20 प्रतिशत कैथोलिक अफ्रीका में रहते हैं। और ये आबादी बढ़ती जा रही है। इसके विपरीत यूरोप में इस दौरान कैथोलिक आबादी 0.08 प्रतिशत घट गई है। इसी तरह एक अध्ययन में पाया गया कि लेटिन अमेरिका में कैथोलिक मत मानने वालों की संख्या 2010 में 70 प्रतिशत से घटकर 2020 में 57 प्रतिशत रह गई। ऐसे में नया पोप अफ्रीका से बनाने की मांग तेजी से उठ रही है। नए पोप के नाम का फैसला दुनिया भर के 135 कार्डिनल मिलकर करेंगे, जिनमें चार भारतीय कार्डिनल भी हैं। दुनिया भर में रोमन कैथोलिकों के सर्वोच्च नेता की नियुक्ति का सिलसिला 'पोप ग्रेगरी द ग्रेट' के साथ 540 ई. से माना जाता है। तब से पोप की यह परंपरा अविरत चली आ रही है। नए पोप की चयन प्रक्रिया को पैपल कॉन्क्लेव कहा जाता है। यानी गुप्त बैठक। कार्डिनल्स बड़े पादरियों का एक ग्रुप है। इन्हीं में से नया पोप चुना जाता है। हालांकि पोप बनने के लिए कार्डिनल होना जरूरी नहीं है। दिवंगत पोप फ्रांसिस के पहले तीन पोप अफ्रीका से बन चुके हैं। दुनिया की नजर इस बात पर भी रहेगी कि जिस तेजी से ईसाई धर्म का विस्तार एशिया में हुआ है, क्या कोई एशियाई भी कैथोलिकों के इस सबसे बड़े पद तक पहुंच सकता है। पश्चिम यूरोप, अमेरिका और लैटिन अमेरिका में भी हाल के वर्षों में नास्तिकों की संख्या बढ़ी है। हालांकि जानकारों का कहना है कि पोप का चयन संख्या के आधार पर नहीं होता है। उसके अपने नियम हैं। कैथोलिक मानते हैं कि भगवान और पवित्र आत्मा, चर्च के नेताओं को चुनने में मदद करती है। दुनिया भर में जितने ईसाई हैं, उनमें करीब 70 फीसदी से ज्यादा कैथोलिक ईसाई हैं। बावजूद इसके पोप के चयन में भी कहीं न कहीं नस्लवाद और रूढ़िवाद का असर दिखता है। यही कारण है कि कोई अश्वेत आज तक पोप के पद पर नहीं पहुंच पाया है। पोप फ्रांसिस को उनके कई नवाचारों के लिए याद किया जाएगा। जिसमें समलैंगिकों के चर्च प्रवेश, समलैंगिक जोड़ों को आशीर्वाद देने, पुनर्विवाह को धार्मिक मंजूरी देना आदि शामिल है। उन्होंने चर्चों में बच्चों के यौन शोषण पर माफी भी मांगी थी। हालांकि कुछ ऐसे काम भी थे, जो पोप चाहकर भी नहीं कर पाए, जिसमे महिलाओं को चर्च में और ऊंचे पद देना और अफ्रीका और एशिया से नया पोप नियुक्त, वेटिकन के दरबारी कल्चर को खत्म करना आदि। महिलाओं को आगे बढ़ाने के संदर्भ में राय देने के लिए पोप फ्रांसिस ने दो आयोगों की भी नियुक्ति की थी, लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकला।

नजरिया

महिला कैदियों के सुरक्षित अधिकार की पहल उल्लेखनीय

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक भारत के राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। आप केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

अपराध की दुनिया में सम्मिलित महिलाओं की ओर जब-जब ध्यान जाता है तो ऐसा लगता है कि इनकी सकारात्मक ऊर्जा जिस ओर लगनी चाहिए थी, उससे ये महिलाएं भटक गयीं और उन्हें आज बंदी जीवन जीना पड़ रहा है। शोध अध्येता यह बताते हैं कि दुनिया में लगभग 8 लाख महिलाएं जेलों में बंद हैं। वह कैदी जीवन जी रही हैं। ऐसे भी अध्ययन प्रकाश में आये हैं कि जेलों में बंद महिलाओं को जेल जीवन बोरिंग नहीं लग रहे हैं और वे व्यक्तिगत रूप से शानदार और सुंदर पल जी रही हैं। महिलाएं जीवित अनुभव के साथ, नए और हस्तांतरणीय कौशल सीखने का मौका पा रही हैं, साथ ही महिलाओं में आत्मविश्वास और उपलब्धि की भावना पैदा करने में जेल मदद कर रहे हैं। पर, जेल में बंद महिलाओं की विरासत में यह खुश महिलाएं न जाने क्यों ऐसा सोच रही हैं।

भारत में महिलाओं के लिए सशक्तीकरण का द्वार अब सरकार खोल दी है। भारत सरकार की मंशा है कि हमारी भारतीय महिलाएं सशक्त हो, समर्थ हों और सक्षम भारत का निर्माण करें। इसके लिए अनेक योजनायें और बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, लखपति दीदी जैसे इनिशिएटिव की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। भारत सरकार हो या कोई अन्य एजेंसीज जो महिलाओं के हित में कार्य करना चाहती हैं, उसके लिए ज़रूरी है कि स्त्रियाँ भी अपने हित-अहित को समझें और सकारात्मक होकर कार्य करें।

अपराध की दुनिया में सम्मिलित महिलाओं की ओर जब-जब ध्यान जाता है तो ऐसा लगता है कि इनकी सकारात्मक ऊर्जा जिस ओर लगनी चाहिए थी, उससे ये महिलाएं भटक गयीं और उन्हें आज बंदी जीवन जीना पड़ रहा है। शोध अध्येता यह बताते हैं कि दुनिया में लगभग 8 लाख महिलाएं जेलों में बंद हैं। वह कैदी जीवन जी रही हैं। ऐसे भी अध्ययन प्रकाश में आये हैं कि जेलों में बंद महिलाओं को जेल जीवन बोरिंग नहीं लग रहे हैं और वे व्यक्तिगत रूप से शानदार और सुंदर पल जी रही हैं। महिलाएं जीवित अनुभव के साथ, नए और हस्तांतरणीय कौशल सीखने का मौका पा रही हैं, साथ ही महिलाओं में आत्मविश्वास और उपलब्धि की भावना पैदा करने में जेल मदद कर रहे हैं। पर, जेल में बंद महिलाओं की विरासत में यह खुश महिलाएं न जाने क्यों ऐसा सोच रही हैं। जेल तो जेल होते हैं। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतेरस ने बार-बार वैश्विक स्तर पर जेलों में महिलाओं की बढ़ती संख्या और उनके सामने आने वाली विशिष्ट चुनौतियों के बारे में चिंताओं को उजागर किया। उन्होंने जेल प्रणालियों को महिलाओं की विशिष्ट आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी होने की आवश्यकता पर जोर दिया, जिसमें मातृत्व, स्वास्थ्य और उनके परिवारों पर कारावास के प्रभाव से संबंधित आवश्यकताएं शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न घटक महिला कैदियों के जीवन को बेहतर बनाने और उनके कारावास के मूल कारणों को दूर करने के लिए काम करने वाले जमीनी स्तर के संगठनों के लिए अधिक धन और समर्थन का भी बार-बार आह्वान किया।

संयुक्त राष्ट्र ने जो किया वह उसकी सभी देशों के लिए पहल मानी जाएगी लेकिन अब एनएचआरसी, भारत ने देश भर की विभिन्न जेलों में बंद महिला कैदियों और उनके बच्चों सहित कैदियों को हो रही कठिनाइयों का स्वतः संज्ञान लिया, यह एक अच्छी खबर है। भारत में बंद बंदी महिलाओं के बारे में सोचता ही कौन है। आयोग के अध्यक्ष ने सही समय पर जब भारत में महिलाओं के सशक्तीकरण की गुहार हो रही है उस समय सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के मुख्य सचिवों को नोटिस जारी कर चार सप्ताह के भीतर रिपोर्ट मांगी है कि वे बताएं की कैदी महिलाओं की स्थिति क्या है। इस रिपोर्ट में उन्होंने अपेक्षा की है कि महिला कैदियों और शिशुओं के साथ रहने वाली महिला कैदियों, दोषी और विचाराधीन महिला कैदियों

के साथ-साथ एक साल से अधिक समय से जेलों में बंद महिला और पुरुष विचाराधीन कैदियों की संख्या उन्हें राज्य व संघ राज्य क्षेत्र बताएं। बहुत साफ शब्दों में आयोग के कहा है कि मुख्य सचिव हमें अवगत करें कि राज्य की जेलों में बंद महिला कैदियों की संख्या कितनी है, उन महिला कैदियों की संख्या जिनके बच्चे माताओं के जेल में रहने के कारण जेलों में बंद हैं, उन महिला कैदियों की संख्या, जो दोषी करार दी गई हैं और जो विचाराधीन कैदी हैं, उन महिला विचाराधीन कैदियों की संख्या, जो एक वर्ष से अधिक समय से जेल में बंद हैं और और पुरुष विचाराधीन कैदियों की संख्या भी और जो एक वर्ष से अधिक समय से जेल में बंद हैं, उन्हें बताया जाए।

वस्तुतः भारत के जेल आज भी बहुत अच्छी स्थिति में नहीं है। वहां का प्रशासन ज्यादा ही लचर हैं। आए दिन मारपीट जेलों की रवायत है। महिला बंधी ऐसी स्थिति में कैसे रहती होंगी, यह कहना मुश्किल है। इससे बंदी महिलाओं के जीवन में अनेक कष्ट उनके बंदी होने से ज्यादा कष्टप्रद लगने लगे हैं। कैदी होने का यह कतई मतलब नहीं है कि कैदी-जन जीवन के अधिकार भी खो चुके हैं। मानव अधिकार की बुनियाद ही जीवन के अधिकार में सम्मिलत है, और जीवन के अधिकार में ही तो जुड़ी हैं उनकी बुनियादी जीवन की ज़रूरतें। यही ज़रूरतें ही तो नहीं पूरी हो पा रही हैं इन बंदियों की। राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग ने जो आज चिंता व्यक्त की है, वह यूं ही नहीं है। बल्कि महिला कैदियों के सम्मान और सुरक्षा के अधिकारों का उल्लंघन होता देख उसने सभी राज्यों को अपनी चिंता ज़ाहिर की है। उसकी चिंता सबसे ज्यादा बुनियादी ज़रूरतों को लेकर भी है कि महिलाओं के खिलाफ बढ़ती हिंसा के कारण मानसिक परेशानी, पर्याप्त शौचालय, सैनिटरी नैपकिन, स्वच्छ पेयजल सुविधाएँ, खराब गुणवत्ता वाला भोजन जिसके कारण विशेष रूप से गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं में कुपोषण होता है, जेलों में उनके साथ रहने वाली महिला कैदियों के बच्चों को शिक्षा के अवसरों की कमी, कानूनी सहायता, व्यावसायिक प्रशिक्षण और पुनर्वास सहित उनके कल्याण कार्यक्रमों का कार्यान्वयन न होना जैसे अनेक विषय शामिल हैं।

महिलाओं की विशेष ज़रूरतें यदि नहीं मिलेंगी, तो वे जियेंगी कैसे? यदि उन्हें उनकी कंडिशनिंग के हिसाब से औपचारिक संसाधन ही जेल प्रशासन नहीं रख रहे हैं तो निश्चय ही यह एक प्रकार से मानवाधिकारों का हनन है। भारतीय जेलों में प्रताड़ना की शिकार कैदी महिलाओं की निगरानी पर भी आयोग यदि अपने विशेष दस्ते भेजे तो निश्चय ही जेलों के भीतर हिंसा की शिकार महिलाओं को सजा के साथ जीवन के मौलिक अधिकार मिलेंगे व उन्हें जीने का हक मिलेगा। जेलों में क्षमता से अधिक कैदी भारत की तमाम जेलों की समस्या बनी हुई है। यदि भारत में अपराध कम नहीं हुए तो विश्वविद्यालयों से ज्यादा जेलों का निर्माण ज़रूरी लगेगा। इन अपराधों पर तो अंकुश बिल्कुल सरकारें खो रही हैं क्योंकि जिन्हें सुरक्षा की जिम्मेदारी भारत में दी जाती है, वही सबसे ज्यादा अपराध में संलग्न पाए जा रहे हैं। ये अपराधी अपने साथ महिलाओं को भी इस प्रकार शामिल करते हैं कि वे अनचाहे भी अपराध से अपने आपको बचा नहीं पातीं।

जब इन्हें जेलों में जीवन बिताना पड़ता है तो अपराधबोध भी इनके जीवन का हक नहीं दिला पाते। मॉनीटर्स और प्रतिवेदकों द्वारा इन मुद्दों को आयोग के संज्ञान से एक बात तो स्पष्ट हो गयी है कि वह कैदी महिलाओं के प्रति पूरी संवेदना रखता है और उन्हें बुनियादी हक से जीने की अनुशंसा करता है। ओएचसीएचआर यानी संयुक्त राष्ट्र मानव अधिकार उच्चायुक्त कार्यालय ने विगत वर्ष भारत की महिला कैदियों की देखभाल को लेकर काफी प्रशंसा की थी। शिष्टमंडल जो भारत आया उसने दो महत्वपूर्ण बात की कि दुर्व्यवहार के शिकार बच्चों को पर्याप्त क्षतिपूर्ति और सहायता प्रदान की गई। भारत ने बच्चों के सर्वोत्तम हितों को बढ़ावा दिया। दूसरी बात, भारत लंबे समय से यातना के पीड़ितों के लिए संयुक्त राष्ट्र स्वैच्छिक कोष में योगदान दे रहा है। महिला कैदियों के लिए अलग जेल विकसित की गई थी। किशोरियों को विशेष सेल में रखा गया था। जेल सुविधाओं पर बोझ कम करने के लिए जमानत प्रावधानों और सामुदायिक सेवा प्रतिबंधों के लिए कानून भी बने हैं और कैदियों को कानूनी सहायता प्रदान की गई। लेकिन अब जब आयोग ने स्वतः संज्ञान लेकर महिला कैदियों को ज्यादा ध्यान देने का आग्रह किया है तो इसके भी मायने हैं। आयोग निःसंदेह भारत की कमियों को गंभीरता से लेकर सबकुछ ठीक करना चाहता है जो जेलों में अब तक ठीक नहीं है।

सामयिक

सामुदायिक हिंसा और आतंकवाद का बढ़ता खतरा

प्रभुनाथ शुक्ल

लेखक पत्रकार हैं।

भारत में हिंदुओं पर सामुदायिक हिंसा की बढ़ती घटनाओं ने सरकार और देश की सुरक्षा व्यवस्था के लिए बड़ी चुनौती खड़ी कर दिया है। अपने ही देश में बहुसंख्य हिंदू हिंसक घटनाओं का शिकार हो रहा है। वैसे सामुदायिक और नस्लीय हिंसा पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय है। लेकिन भारत के आसपास पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ हमले और हिंसा बढ़ गए हैं। नेपाल जैसे देश में भी रामनवमी जुलूस पर हिंसा को अंजाम दिया गया। भारत के पड़ोसी इस्लामिक देश में हिंदुओं की स्थिति बद से बदतर है। जबकि ये कभी भारत के हिस्सा थे।यहाँ हिंदुओं पर लगातार धार्मिक उत्पीड़न और हिंसा की घटनाएं भारत की चिंता को बढ़ा दिया है। आतंकवाद से लड़ रहे भारत के सामने सामुदायिक हिंसा की घटनाएं बड़ी चुनौती बन रहीं हैं। सबसे अहम मुद्दा यह है कि अपने देश में ही हिंदू बाहुल्य होने के बाद भी हिंदू सामुदायिक हिंसा का शिकार बन रहा है। जबकि चीन में उइगर मुसमानों का दमन किसी से छुपा नहीं है, लेकिन चीन के खिलाफ पाकिस्तान, बांग्लादेश खामोश है। कश्मीर हुआ नरसंहार इसका ताज़ा उदाहरण है। भारत में इस तरह की हिंसा के पीछे वोटबैंक के लिए राजनैतिक तुष्टिकरण सबसे बड़ी समस्या है।

भारत में हिंदुओं पर हिंसक हमले इस्लामिक आतंकवाद की एक सोची समझी रणनीति है। पाकिस्तान, बांग्लादेश में हिंदुओं का सफाया हो रहा है जबकि अफगानिस्तान में हिंदुओं की आबादी गिनती पर आ गई है। भारत में इस तरह के सामुदायिक और धार्मिक दंगे भड़काने के लिए पाकिस्तान मूल रूप से जिम्मेदार है। लेकिन हम इस तरह की बात कर अपनी जिम्मेदारी से बच भी नहीं सकते हैं। भारत इस्लामिक आतंकवाद से तो हमेशा से पीड़ित रहा है। लेकिन हाल के वर्षों में राजनैतिक कारणों और उसके फैसलों से देश में सामुदायिक हिंसा, प्रदर्शन और पत्थरबाजी की घटनाएं बढ़ गई हैं। दोनों समुदायों में एक दूसरे के प्रति नफरत और डर का माहौल पैदा हुआ है। इस तरह की सामुदायिक हिंसा के पीछे सामाजिक, आर्थिक, राजनीति, सोशलमीडिया और धार्मिक कारण मुख्य हैं, जिसकी वजह से ऐसी घटनाएं देश के धार्मिक और सांप्रदायिक तानेबाने को विभाजित करती दिखती हैं।

जम्मू - कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को पाकिस्तानी आतंकवादियों ने जिस तरह निर्दोष पर्यटकों का नरसंहार किया वह मानवता के खिलाफ है। इस हिंसा में 26 लोगों की मौत हुई और कई घायल हुए। आतंकवादियों ने सिर्फ हिंदुओं को निशाना बनाया और उनका धर्म पूछ कर उन्हें गोलीबारी मारी। हालांकि की कश्मीर में इस नरसंहार को लेकर काफी गुस्सा देखा जा रहा है। कश्मीर में इस बात पर भी गुस्सा है कि हमले में सिर्फ हिंदू मारे गए। लोगों का कहना है कि पर्यटकों की जान बचाने के लिए दो स्थानीय मुस्लिम और ईसाई, जैन भी मारे गए है। मीडिया का यह रुख गलत है। पूरा कश्मीर पीड़ित परिवारों के साथ है। आतंकियों को फांसी देने की भी बात कहीं गई है। देश के कई हिस्सों में मुस्लिम संस्थाओं ने प्रदर्शन कर पाकिस्तान के खिलाफ नारेबाजी भी किया है।

इस साजिश के पीछे हाल में पाकिस्तान आर्मीचीफ जनरल कियानी की तरफ से भारत और हिंदुओं के खिलाफ दिया गया वह उसकाऊ बयान भी अहम माना जा रहा है जिसमें उन्होंने हिंदुओं के खिलाफ भड़काने वाला बयान दिया था। कियानी के बयान के ठीक कुछ दिन बात पहलगाम में आतंकी हमला हुआ है जिसमें पर्यटकों का धर्म पूँछ कर नरसंहार किया गया। यह पाकिस्तान की सोची समझी रणनीति है, क्योंकि वह भारत से सीधीजंग में कभी नहीं जीत सकता है। ऐसी स्थिति में वह हिंदुओं को निशाना बनाकर भारतीय मुसलमानों का मसीहा बनना चाहता हैएवं कश्मीर में अलगाववाद की नींव और मजबूत करना चाहता है। खैबरपखतून में बलोच आर्मी की तरफ से किए ट्रेन हाईजैक के पीछे वह भारत का हाथ मानता है। जिसकी वजह से वह बौखलाया था और बदले के लिए बेताब था। लेकिन वह जो कर रहा है उसकी भरपाई उसे करनी होगी।

कश्मीर में धारा 370 खत्म होने के बाद कश्मीर आहिस्ता - आहिस्ता विकास की मुख्यधारा में लौट रहा है। आतंकी घटनाएं कम हुई हैं। पर्यटकों की आमद बढ़ने लगी है। सेबों की खेती लहलाहने लगी है। यह सब देख पाकिस्तानी फ़ौज में बौखलाहट है जिसकी वजह से वह इस तरह की सामुदायिक हिंसा की साजिश रच रहा है। कश्मीर में सामुदायिक हिंसा की यह पहली घटना नहीं है। आतंकवादियों ने पुलवामा जैसी घटनाओं को अंजाम दिया है। कश्मीर में साल 2019 के बाद धारा 370 लागू होने के बाद यह पहली सबसे बड़ी आतंकी नरसंहार की घटना है। दूसरा समझे अहम कारण कश्मीर के राजनैतिक और अलगाववादी कभी शान्ति और विकास नहीं चाहते हैं। क्योंकि धारा 370 खत्म होने के बाद उनकी तमाम स्वतंत्रता जहाँ बाधित हुई वहीं आर्थिक नुकसान हुआ है। वहां के राजनेताओं और अलगाववादियों का पाकिस्तान प्रेम दुनिया में जगजाहिर है। इसके बावजूद धारा 370 का खात्मा, तीन तलाक कानून और वक्फ संशोधन जैसे राजनैतिक फैसले इस आग में घी का काम किया है। हालांकि यह आम मुसलमानों और कश्मीरियों की सोच नहीं है। यह सिर्फ अलगाववादियों की सोच है।

पहलगाम में हिंदुओं के साथ विदेशी नागरिक और नेवी में कार्यरत जवान की भी मौत हुई है। जोड़ा शादी के बाद हनीमून मानाने गया था जो निर्मम आतंकी साजिश का शिकार हुआ है। नरसंहार के बाद भारतीय सेना के लोगों के पहुंचने के बाद भी लोग इतने दहशत में थे कि उन्हें भी आतंकी समझ लिया। इस घटना में केंद्र और राज्य सरकार अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकती। जब वहां काफी तादात में पर्यटकों की आमद हो रहीं थी तो पर्यटकों की सुरक्षा के लिए सेना और राज्य पुलिस के जवानों की तैनाती क्यों नहीं की गई। क्योंकि एलओसी से सटे कश्मीरी जिलों में आतंकवाद खूब फलता -फूलता रहा है।

कियानी के विभाजनकारी संदेश को हमारी सरकार, खुफ़िया एजेंसिया और सुरक्षा एजेंसिया नहीं समझ पाईं। ऐसे संवेदनशील पर्यटक स्थलों पर सुरक्षा के सख्त इंतजाम होने चाहिए थे। क्योंकि यह इलाका काफी ऊंचाई पर है जहाँ का प्राकृतिक लुत्फ़ उठाने के लिए भारी तादात में देशी- विदेशी पर्यटक आ रहे थे। यह इलाका एलओसी से सटा है और प्राकृतिक जाटिलताओं से भरा है। ऊँचे पहाड़, नदिया घने -जंगल, देवदार और चीड़ के पेड़ यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता को और बढ़ाते हैं। यहाँ आतंकवादियों की पहुँच जटिल होने के बाद लेकिन सुगम है। यहाँ की संवेदनशीलता को देखते हुए अगर हमारी सुरक्षा एजेंसियां सतर्क होती तो निश्चित रूप से इस नरसंहार से बचा जा सकता था। राज्य में इस तरह की घटनाएं पर्यटन उद्योग और उसकी संभावनाओं पर पानी फेरती हैं। हम अपनी चूक और नाकामियों से नहीं बच सकते। यह गंभीर मंथन का विषय है। कश्मीर के पर्यटन स्थलों पर हमें सुरक्षा व्यवस्था को सख्त रखना होगा। भविष्य में ऐसी स्थिति से बचने के लिए वहां सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने होंगे। यह हमला भारत की आत्मा पर है यह राजनीति का वक्त नहीं है। सारा देश गुस्से में है। रणनीति बनाकर पाकिस्तान और आतंकवाद को सबक सिखाने की जरूरत है।

लोकतंत्र की शपथ लेने वाली राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी क्या कर रहीं थीं। हिंदुओं के खिलाफ इस तरह की हिंसा को राज्य सरकार क्यों बर्दास्त करती रही। केंद्र सरकार ने खुद क्यों नहीं हिंसा का संज्ञान लेकर केंद्रीय बल भेजा। क्या सिर्फ हिंदुओं की लाशों पर सियासत करना ही हमारा धर्म है। अहम बात जब बंगाल की मुख्यमंत्री ने साफ कर दिया था कि राज्य में वक्फ कानून लागू नहीं होगा फिर क्यों हिंसा फैली। हिंसा के बाद मुख्यमंत्री मौलानाओं से बातचीत कर सकती हैं, लेकिन पीड़ित हिंदुओं का हाल लेने घटना स्थल पर तत्काल क्यों नहीं पहुँची। बंगाल से अवैध बांग्लादेशी और रोहिंग्या को क्यों नहीं निकला जा रहा। केंद्र, राज्य सरकार के साथ हमारी सुरक्षा एजेंसिया क्या कर रहीं। क्या बांग्लादेशियों का अवैध प्रवास सिर्फ चुनावी मसला है।

जिस बांग्लादेश को भारत ने पाकिस्तान से अलग कराया उसी बांग्लादेश में पाकिस्तान की सह पर अतिवाद पांव पसार रहा है। बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार के पतन के बाद हिंदुओं के घरों, व्यवसायों, और मंदिरों पर बड़े पैमाने पर हमले हुए। यूएन की एक रिपोर्ट में बताया गया कि हिंदुओं को लक्षित कर हमले किए जिसमें 1400 लोगों की मौत हुई। मीडिया रिपोर्ट में कहा गया है कि बांग्लादेश में साल 2024 की हिंदुओं के खिलाफ 2200 हिंसक घटनाएं दर्ज की गईं। यह साल 2023 की तुलना में 700 फीसदी अधिक है। बांग्लादेश तो हमारा मित्रराष्ट है वहां हिंदुओं के खिलाफ बढ़ता अतिवाद चिंता का विषय है। भारत और पड़ोसी मुल्कों में हिंदुओं के खिलाफ बढ़ती हिंसा भी सत्ता और विपक्ष की विभानकारी नीति है। वोटबैंक की यह राजनीति देश को कहाँ ले जाएगी यह चिंता का विषय है। ऐसा भी नहीं है कि मुसलमानों पर हमले नहीं हुए हैं, लेकिन अपने ही देश में बहुसंख्यक होने के बाद भी जितना हिंदू पीड़ित है उतना मुसलमान नहीं। बांग्लादेश, मुर्शिदाबाद और पहलगाम की हिंसा पर मुस्लिम समुदाय भी आक्रोश है, लेकिन यहीं उबाल पहले देखने को क्यों नहीं मिला। हिंदुओं के खिलाफ हुई हिंसा के समर्थन में पाकिस्तान, बांग्लादेश के खिलाफ आम मुसलमान क्यों नहीं खड़ा हुआ। बंगाल में हिंदू बाहुल्य मुसलमानों के खिलाफ मुर्शिदाबाद जैसी हिंसा क्यों नहीं भड़की। हिंदुओं को एक सोची समझी रणनीति के तहत निशाना बनाया जा रहा है। यह हमारी साझा संस्कृति के खिलाफ है।

पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश में जिस तेजी से हिंदुओं की आबादी घटी क्या भारत में भी वैसा डाटा है। क्या भारत जैसी धार्मिक एवं सामुदायिक स्वतंत्रता पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश में हिंदुओं को रहीं या है। अगर ऐसा होता तो इनकी आबादी बढ़ने के बजाय घटती क्यों। कश्मीर से ही लाखों कश्मीरी पंडितों का पलायन क्या साबित करता है। फिर वहां से मुसलमानों का पलायन क्यों नहीं हुआ। भारत - पाकिस्तान के विभाजन के बाद पाकिस्तान में हिंदुओं की आबादी 23 फीसदी थी अब 3.7 फीसदी रह गई। लगातार वहां हिंदुओं की आबादी घट रहीं है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार 1951 में बांग्लादेश में हिंदुओं की आबादी 22 फीसदी थी, ज अब 8 फीसदी से कम हो गई। 1964 से 2013 के बीच 1.1 करोड़ से अधिक हिंदुओं को बांग्लादेश छोड़ना पड़ा। आखिर बांग्लादेश में तो ऐसा नहीं होना चाहिए था फिर क्यों हुआ। जबकि अफगानिस्तान में 70 के दशक में लगभग 7 लाख हिंदू और सिख रहते थे, अब यह संख्या घटकर 1,350 के आसपास रह गई है। इस सवाल का जबाब क्या किसी के पास है।

हम यह भी नहीं कहते हैं कि भारत में मुसलमानों के खिलाफ लिंचिंग की घटनाएं नहीं हुई हैं, लेकिन जैसा हिन्दुस्थान में हिंदुओं के साथ हो रहा वैसा नहीं। वैसे अमेरिका में भी हिंदुओं और सिखों के खिलाफ नस्लीय हिंसा हुई है। हिंदुओं के मंदिरों को भी निशाना बनाया गया है। नस्लीय टिप्पणीयां हुई हैं, लेकिन पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसी नहीं। हमें इस तरह की सामुदायिक हिंसा से बचना होगा। राजनैतिक लाभ लेने के लिए देश को हिंदू -मुसलमान में बांटना ठीक नहीं। इससे देश की एकता, अखंडता कमजोर होगी। साम्प्रदायिक हिंसा को किसी भी तरीके का राजनैतिक संरक्षण नहीं मिलाना चाहिए। नफ़रती बयानबाजी और सोशलमीडिया पर फ़ैलते भड़काऊ वीडियो और संदेश पर कड़ाई से प्रतिबन्ध लागू होना चाहिए। देश, संसद और उसकी संवैधानिक संस्थाएं जाति, धर्म और समुदाय से सर्वोपरी हैं। हमें उनका सम्मान करना होगा। हमें किसी कानून या बिल से असहमति है तो देश में अदालत और कानून भी है। हिंसा और अपनी तागत दिखाने के बजाय हमें ऐसी संस्थाओ का सम्मान करना होगा। हमारे लिए देश सर्वोपरि है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

दृष्टिकोण

राजनीतिक विषयों पर व्यंग्य लेखन

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

व्यंग्य लेखन को साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में जाना जाता है। आमतौर पर इसकी भाषा सरल, प्रवाह पूर्ण एवं प्रतीकात्मक होती है, जिसे आम पाठक बहुत आसानी के साथ समझ लिया करते हैं। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में नियमित रूप से प्रकाशित होने वाली व्यंग्य रचनाओं के नियमित पाठक है। इनकी संख्या कहानी एवं कविताओं के पाठकों की तुलना में कहीं से कहीं तक कम नहीं होगी। रोजमर्रा की जिंदगी में नाना प्रकार की समस्याओं और विसंगतियों से जूझते हुए आम आदमी के जलते कलेजे को ठंडक पहुंचाने का काम भी व्यंग्य रचनाएं करती है।

यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि कड़वी से कड़वी सच्चाई को भी गुदगुदाते अंदाज में यदि व्यक्त कर दिया जाए, तो समझने वाला समझकर सही राह पर आ जाता है। व्यंग्य रचनाएं एक प्रकार से आम आदमी की पीड़ा का हरण करती है। आम आदमी के दिल का गुबार चाहे वह किसी भी कारण से उपजा हो, उसका शमन करने में व्यंग्य रचनाओं का अहम योगदान है। व्यंग्य रचनाओं के विभिन्न पात्रों को समझने के लिए किसी को भी अपने दिमाग पर अतिरिक्त रूप से बोझ नहीं डालना पड़ता। इशारों ही इशारों में व्यंग्य के माध्यम से सटीक निशाना साध लिया जाता है, और मजे की बात यह कि किसी को सीधे तौर पर बुरा भी नहीं लगता।

लेकिन इन दिनों यह चर्चा जोरों पर है कि राजनीतिक विषयों पर व्यंग्य लेखन खतरों से घिरा हुआ है। अब वास्तविकता जो भी हो लेकिन एक बात तो तय है कि जहां-जहां विसंगतियों की भरमार है, विडम्बनाएं है और विरोधाभासी स्थितियां हैं, वहां से व्यंग्य निकलता है और अपने उद्देश्य को प्राप्त करता है। यह बात किसी से छुपी हुई नहीं है कि देश में आखिर राजनीति के नाम पर कैसी राजनीति की जा रही है। बुनियादी सवालों को एक तरफ रखकर बेकार की बातों को हवा देते हुए हर कोई अपना राजनीतिक वर्चस्व स्थापित करने की धुन में लगा दिखाई देता है। ऐसे में विकृत राजनीति पर पर नकेल कसने का काम व्यंग्य रचनाएं ही तो कर सकती है।

देश-प्रदेश को लेकर इनकी और उनकी धारणा के चलते आम आदमी यह समझ नहीं पाता कि देश वास्तव में प्रगति पथ पर अग्रसर है या रसातल की ओर अग्रसर है। एक प्रकार से आदमी चक्करघिन्नी बन गया है। सर्वमान्य सत्य को भी झुठला देने के भरपूर प्रयासों का नाम ही राजनीति बनकर रह गया है। सत्तापक्ष और प्रतिपक्ष का परस्पर तौर तरीका और व्यवहार कुछ ऐसा है कि मानो इनके बीच जन्म-जन्म का बेर हो। देश-प्रदेश के विकास को तीव्र गति देने की दिशा में कोई एक दूजे को सहयोग देने हेतु आगे नहीं आता। ऐसी स्थिति में साहित्य जगत की व्यंग्य विधा ही विकृत होती जा रही राजनीति की शल्य क्रिया करने में सक्षम होती है।

दरअसल राजनीतिक विषयों पर व्यंग्य लेखन को भी साहित्य के साथ-साथ पत्रकारिता का भी एक अहम हिस्सा माना जाना चाहिए। व्यवहार में देखा गया है कि ज्वलंत मुद्दों पर विभिन्न वरिष्ठ विचारकों एवं पत्रकारों के गंभीर आलेख की तह तक आम पाठक नहीं पहुंच सकता। इसके विपरीत इन्हीं विषयों पर आधारित व्यंग्य रचनाओं के भावार्थ को आसानी के साथ हृदयंगम करना आम पाठक के लिए सहज होता है। ऐसा भी नहीं है कि व्यंग्य रचनाएं राजनीति पर निशाना साध रही हो। हकीकत तो यह है कि राजनीति विसंगत होती जा रही है, इसलिए व्यंग्य की दृष्टि राजनीति पर वक्र दृष्टि बनकर कहर ढाती प्रतीत होने लगती हैं।

विश्व मलेरिया दिवस पर विशेष

श्वेता गोयल

लेखक शिक्षक हैं।

मलेरिया के विरुद्ध युद्ध : आखिरी मोर्चे पर दुनिया

मलेरिया एक प्राचीन लेकिन अब भी प्रासंगिक बीमारी है, जिसने सदियों से मानव सभ्यता को प्रभावित किया है। यह मुख्य रूप से एनोफिलीज नामक मादा मच्छर के काटने से फैलता है, जो प्लाज्मोडियम परजीवी से संक्रमित होती है। जब यह परजीवी मानव शरीर में प्रवेश करता है तो वह यकृत और रक्त कोशिकाओं में पहुंच कर वहां अपनी संख्या बढ़ाता है और शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को क्षतिग्रस्त करता है। इसके लक्षणों में तेज बुखार, कंपकंपी, सिरदर्द, पसीना आना, उल्टी, मांसपेशियों में दर्द और थकान शामिल होते हैं, जो अक्सर अन्य सामान्य बुखार जैसी बीमारियों से भिन्न प्रतीत नहीं होते लेकिन समय रहते इलाज न होने पर यह घातक सिद्ध हो सकता है। विशेषकर प्लाज्मोडियम फाल्सीपेरम से संक्रमित मामलों में यह कोमा या मृत्यु का कारण भी बन सकता है।

लोगों को मलेरिया के खतरों और उससे बचाव के उपायों के प्रति जागरूक करने के लिए प्रतिवर्ष 25 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य संगठन की पहल पर विश्व मलेरिया दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष मलेरिया दिवस की थीम 'मलेरिया का अंत हमारे साथः पुनर्निवेश, पुनर्कल्पना, पुनर्जागृति' (Malaria Ends with Us: Reinvest, Reimagine, Reignite) रखी गई है, जिसका निहितार्थ यह है कि मलेरिया को समाप्त करने की जिम्मेदारी अब हम सबकी है। इसका तात्पर्य है कि हमें एक बार फिर इस दिशा में नए सिरे से प्रयास करने होंगे, निवेश करना होगा, कल्पनाशील समाधान खोजने होंगे और उस जनचेतना को पुनः जाग्रत करना होगा, जो एक समय पोलियो जैसी बीमारियों को हराने के लिए देश-दुनिया में देखी गई थी। हालांकि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने अनेक रोगों पर विजय प्राप्त कर ली है लेकिन मलेरिया अभी भी विकासशील और गरीब देशों में एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। भारत जैसे देश, जहां विविध भौगोलिक, जलवायु और सामाजिक परिस्थितियां विद्यमान हैं, वहां यह बीमारी हर साल लाखों लोगों को प्रभावित करती है। भारत सरकार और विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के संयुक्त प्रयासों के बावजूद देश के अनेक हिस्सों में मलेरिया का प्रकोप आज भी गंभीर है, खासकर जनजातीय और दूरदराज के क्षेत्रों में।

मलेरिया न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है बल्कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर भी बोझ डालता है। इससे प्रभावित होने वाले लोग आमतौर पर आर्थिक रूप से कमजोर तबके से होते हैं, जिनकी कार्यक्षमता इस बीमारी से बुरी तरह प्रभावित होती है। उनके इलाज पर होने वाला खर्च, कामकाजी दिनों की हानि और बच्चों की शिक्षा में रुकावट जैसे कारक इस रोग की व्यापक सामाजिक और आर्थिक कीमत को दर्शाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की मलेरिया रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2022 में मलेरिया के कुल अनुमानित 24.9 करोड़ मामले सामने आए थे जबकि इससे 6.08 लाख लोगों की मृत्यु हुई। इनमें से अधिकांश मौतें अफ्रीका में हुईं और मृतकों में सबसे बड़ी संख्या पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की थी। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि मलेरिया आज भी दुनिया के सबसे बड़े संक्रामक रोगों में से एक है, जो हर दिन सैंकड़ों जानें लेता है। यह एक ऐसी बीमारी है, जिसे रोका जा सकता है और उपचार किया जा सकता है, फिर भी यह इतने बड़े पैमाने पर मानव जीवन को प्रभावित करता है।

इस वर्ष की थीम के तीन प्रमुख संदेश हैं, Reinvest, Reimagine, Reignite, जो इस बीमारी के खिलाफ संघर्ष को एक नई दिशा प्रदान करते हैं। 'Reinvest' का अर्थ है कि मलेरिया नियंत्रण के लिए पुनः वित्तीय और संसाधनगत निवेश आवश्यक है। इस बीमारी की रोकथाम और उन्मूलन के लिए आवश्यक है कि सरकारें, अंतर्राष्ट्रीय संगठन, निजी कंपनियां और जन समुदाय इस दिशा में फिर से गंभीरता से प्रयास करें। अनुसंधान, निगरानी तंत्र, दवा और वैक्सीन वितरण, मच्छर नियंत्रण तकनीक, और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने जैसे क्षेत्रों में अधिक संसाधन लगाने की आवश्यकता है। अनेक देशों में आर्थिक संकट के चलते मलेरिया नियंत्रण कार्यक्रमों में बजट कटौती की गई है, जिससे रोग के मामलों में पुनः वृद्धि देखने को मिली है। यदि हम इस बीमारी को जड़ से खत्म करना चाहते हैं तो हमें इस दिशा में ठोस निवेश करना होगा।

'Reimagine' का आशय है कि हमें पुराने तरीकों से आगे बढ़कर नए और नवाचारी उपायों की ओर देखना होगा। मलेरिया की रोकथाम के लिए स्मार्ट टैक्नोलॉजी, डिजिटल स्वास्थ्य निगरानी, पर्यावरण आधारित समाधान और वैकल्पिक उपचार मॉडल की कल्पना की जा सकती है। मलेरिया वैक्सीनेशन के क्षेत्र में हाल ही के वर्षों में काफी प्रगति हुई है। कुछ टीके विभिन्न देशों में उपयोग में लाए जा रहे हैं। यदि इन टीकों को सफलतापूर्वक बड़े पैमाने पर लागू किया जाए तो यह मलेरिया उन्मूलन की दिशा में ऐतिहासिक मील का पत्थर साबित हो सकता है। साथ ही, जैविक कीटनाशकों का उपयोग, पर्यावरणीय संवेदनशीलता,

लार्वा नियंत्रण के लिए ड्रोन आधारित छिड़काव और स्मार्ट मच्छरदानी जैसी तकनीकों को ग्रामीण क्षेत्रों में अपनाकर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सकता है।

'Reignite' इस थीम का सबसे प्रेरक भाग है, जो इस बात पर बल देता है कि मलेरिया के विरुद्ध यह संघर्ष केवल स्वास्थ्य विभाग या सरकारों की जिम्मेदारी नहीं बल्कि यह हम सबका साझा दायित्व है। जिस प्रकार पोलियो के खिलाफ जन आंदोलन चला, उसी तरह मलेरिया को लेकर भी जनसहभागिता जरूरी है। इसके लिए जन जागरूकता कार्यक्रमों, स्कूल शिक्षा अभियानों, स्थानीय स्वच्छता अभियानों और मीडिया सहयोग की भूमिका अहम है। लोगों को यह समझाना जरूरी है कि मलेरिया की रोकथाम केवल स्वास्थ्य सेवाओं से संभव नहीं, जब तक कि समाज का हर व्यक्ति उसमें भागीदारी न निभाए। भारत में मलेरिया की चुनौती को देखते हुए हाल के वर्षों में कई सकारात्मक प्रयास किए गए हैं। भारत सरकार के 'नेशनल वेक्टर बॉर्न डिजीज कंट्रोल प्रोग्राम' के तहत मच्छरों के प्रजनन स्थलों की पहचान और सफाई, मच्छरदानी वितरण, स्वास्थ्य कर्मियों की नियुक्ति और प्रशिक्षित निगरानी तंत्र को सुदृढ़ किया गया है। इसके परिणामस्वरूप मलेरिया के मामलों में वर्ष 2000 की तुलना में 2023 तक उल्लेखनीय कमी देखी गई है लेकिन देश का लक्ष्य है वर्ष 2030 तक मलेरिया मुक्त भारत की घोषणा। इसके लिए अब अंतिम दौड़ सबसे चुनौतीपूर्ण है, जिसमें जन सहयोग, नीति निर्धारण और सतत निगरानी की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होगी।

मलेरिया के संदर्भ में यह भी आवश्यक है कि हम इसके सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय पक्षों को समझें। यह बीमारी गरीबों और पिछड़े क्षेत्रों में अधिक प्रचलित है क्योंकि वहां स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता सीमित होती है और स्वच्छता की स्थिति खराब रहती है। गंदे पानी के जमाव, खुले नालों, वर्षा के बाद जलभराव और कुपोषण जैसे कारक इस बीमारी को फैलाने में सहायक होते हैं। मलेरिया और गरीबी के बीच का संबंध चक्रवात की तरह है, जो एक-दूसरे को बढ़ावा देता है। इस रोग के खिलाफ लड़ाई को तभी सफलता मिलेगी, जब हम सामाजिक असमानताओं को भी संबोधित करें। मलेरिया का प्रभाव केवल शारीरिक ही नहीं, मानसिक और सामाजिक भी होता है। विशेषकर बच्चों की शिक्षा पर इसका प्रतिकूल प्रभाव देखा गया है। मलेरिया से पीड़ित बच्चा लंबे समय तक विद्यालय नहीं जा पाता, जिससे उसका सीखने का क्रम बाधित होता है। कई बार अभिभावकों को अपने बीमार बच्चों की देखभाल के लिए काम छोड़ना पड़ता है, जिससे पारिवारिक आय में कमी आती है। यही कारण है कि मलेरिया की रोकथाम केवल एक स्वास्थ्य मुद्दा नहीं बल्कि यह शिक्षा, आजीविका और सामाजिक विकास से जुड़ा व्यापक विषय है।

मलेरिया से लड़ाई में सफलता तभी मिल सकती है, जब हम प्रत्येक स्तर पर एकजुट होकर कार्य करें। एक एकीकृत और टिकाऊ रणनीति की आवश्यकता है, जो न केवल मलेरिया के खिलाफ तात्कालिक कार्यवाही करे बल्कि उसे दीर्घकालिक रूप से समाप्त करने के लिए सशक्त आधार तैयार करे। इस वर्ष की थीम 'Malaria Ends with Us' महज एक स्लोगन नहीं है बल्कि एक आंदोलन की नींव है, जिसमें हम सभी को भागीदार बनना है। हमें यह स्वीकार करना होगा कि मलेरिया को समाप्त करने की कुंजी हमारे हाथों में है। जब हम सामूहिक रूप से संकल्प लेंगे, जब हम नए विचारों को अपनाएंगे, जब हम दोबारा अपने प्रयासों में समर्पण का भाव लाएंगे, तभी हम मलेरिया जैसे घातक रोग को इतिहास के पन्नों तक सीमित कर पाएंगे। यही इस वर्ष की थीम का सार है, एक नई कल्पना, एक नया संकल्प, और एक नया संघर्ष, जिसकी शुरुआत हम सब से होती है। यदि यह अभियान हर नागरिक के दिल में यह भावना जगा दे कि 'मलेरिया अब नहीं' तो वह दिन दूर नहीं, जब हम विश्व मलेरिया दिवस को एक ऐतिहासिक विजय दिवस के रूप में मनाएंगे।

पहलगाम

आरबी त्रिपाठी

निर्दोष सैलानियों की दुखद मौत के सबक क्या ?

हम जिस समय की बात कर रहे हैं वह दौर था सीज फायर का, तब तक 370 समाप्त नहीं हुई थी और एलजी के हाथों कमान थी तथा पुलवामा जैसी निंदनीय घटना नहीं घटी थी। श्रीनगर के एयरपोर्ट से लेकर शहर तक और श्रीनगर से जम्मू होकर शेष भारत को जोड़ने वाले हाईवे पर चप्पे-चप्पे पर सीआरपी के सशस्त्र जवान चौकसी पर तैनात थे तथा सतत पेट्रोलिंग भी की जा रही थी। हालांकि हाईवे छोड़कर पहलगाम के रास्ते पर कोई सुरक्षा कर्मी मौजूद नहीं था।

उस दिन भी वहाँ कोई सुरक्षा कर्मी तैनात नहीं थे। सैलानी भी कम संख्या में नहीं थे लेकिन निर्भीक निडर होकर अपनी ट्रिप को एन्जॉय कर रहे थे। दिन था 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस और सन् 2018 का था। हम पहलगाम से तकरीबन पांच- छह किलोमीटर के पहाड़ी ऊबड़ खाबड़ रास्ते को घोड़े पर बैठकर चढ़ाई कर बैसरन के खुले घास वाले मैदान और प्राकृतिक दृश्यों का लुत्फ उठा रहे थे। इस यादगार यात्रा में घोड़े वाले भाई हमारे चार साल के पोते को अपनी पीठ पर लादे इत्मीनान से चल रहे थे क्योंकि घोड़े पर बेठे- बैठे वह असहज हो गया था। चाहे घोड़े वाले हों या टैक्सी चालक, होटल्स के कुक हों या फेरी लगाकर कश्मीरी शॉल अथवा वहाँ प्रचलित पोशाक, गर्म कपड़े बेचने वाले सभी बड़ी विनम्रता से पेश आ रहे थे। उनका कहना था आप हमारे मेहमान है जिनकी खातिरदारी करना उनका कर्तव्य है ताकि आप अच्छे अनुभव लेकर लौटें।

हम जिस समय की बात कर रहे हैं वह दौर था सीज फायर का, तब तक 370 समाप्त नहीं हुई थी और एलजी के हाथों कमान थी तथा पुलवामा जैसी निंदनीय घटना नहीं घटी थी। श्रीनगर के एयरपोर्ट से लेकर शहर तक और श्रीनगर से जम्मू होकर शेष भारत को जोड़ने वाले हाईवे पर चप्पे-चप्पे पर सीआरपी के सशस्त्र जवान चौकसी पर तैनात थे तथा सतत पेट्रोलिंग भी की जा रही थी। हालांकि हाईवे छोड़कर पहलगाम के रास्ते पर कोई सुरक्षा कर्मी मौजूद नहीं था।

बीते मंगलवार 22 अप्रैल को भी सैलानियों के पसंदीदा स्थल पहलगाम से लेकर बैसरन तक सुरक्षा के इंतजाम नहीं थे जबकि दक्षिण कश्मीर के इस इलाके में आतंकियों की वारदात का कथित तौर पर इनपुट मिला था। वहां बड़ी तादाद में सैलानी थे और किसी को अंदाजा भी नहीं होगा कि पलक झपकते पुलिस वर्दी और पाजामा कुर्ता पहने आतंकी एक-एक कर निहत्थे निर्दोष पर्यटकों की बेरहमी से जान ले लेंगे। यही नहीं उनका धर्म पूछकर सीधे गोलियां दागेंगे। यह सीधे तौर पर देश की सुरक्षा के लिये जिम्मेदार बड़े ओहदों पर बैठे लोगों और शासन व्यवस्था को चुनौती की तरह है।

यह घटना अप्रत्याशित और दुर्भाग्यपूर्ण तो है ही कश्मीर घाटी में हाल के वर्षों में लाखों की रिकार्ड संख्या में पहुंच रहे देश विदेश के पर्यटकों में भय उत्पन्न करने तथा जो लोग यह समझने की भूल कर बैठे थे कि घाटी में अब सब कुछ सामान्य हो चला है, वहां की पर्यटन केन्द्रित अर्थ व्यवस्था पटरी पर लौट रही है उन्हें आत्म मुग्धता से बाहर निकालकर वास्तविकता से परिचित कराने का कुत्सित और कायराना प्रयास था।

इतना ही नहीं यह पर्यटन पर निर्भर जम्मू-कश्मीर के आवाम को सबक सिखाने तथा रोजगार धंधों की कमर तोड़ने की निंदनीय हरकत है। शासन व्यवस्था के लिये भी बड़ा सबक और सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक चाक-चौबंद करने की चुनौती है। हालांकि सबक हम सीखते नहीं यह भी सच है। अगर सबक लेते तो पुलवामा में फरवरी 2019 में आतंकी हमले में जान गंवाने वाले सैनिकों की शहादत से काफी-कुछ सबक लिया जा सकता था। उस घटना के बाद सर्जिकल स्ट्राइक जरूर की गई थी जो तात्कालिक रूप से जरूरी कदम था लेकिन इसके बावजूद घाटी में आतंकी वारदातें रुक गई हो ऐसा नहीं हुआ। कई आतंकी हमलों में हमारे सैनिकों और नागरिकों, प्रवासी श्रमिकों को जान गंवानी पड़ी।

अब केन्द्रीय कैबिनेट की सुरक्षा कमेटी (सीसीएस) की 23अप्रैल को हुई बैठक में जो प्रमुख रूप से पांच फैसले लिये गये हैं उन पर शीघ्र अमल की दरकार है। इनमें सिंधु जल संधि तत्काल स्थगित, अटारी बॉर्डर बंद करने, पाक नागरिकों को 48 घंटों में भारत छोड़ने, नई दिल्ली स्थित पाकिस्तानी उच्चायोग में पदस्थ सलाहकारों को अवांछित घोषित कर एक सप्ताह में भारत छोड़ने, इसी तरह भारत भी पाक से अपने सलाहकारों को वापस बुलायेगा तथा उच्चायोगों में स्टाफ की संख्या घटाकर 30 करने का निर्णय शामिल हैं। फैसला आगामी 1 मई से लागू होगा।

निश्चित ही तत्कालिक रूप से उक्त फैसले आवश्यक थे जिनकी सराहना की जाना चाहिये। लेकिन अब सबसे बड़ा मुद्दा है जम्मू-कश्मीर में सामान्य स्थिति लौटाने और सैलानी फिर से बैखौफ होकर घाटी के नयनाभिराम पर्यटन स्थलों की सैर कर सकें तथा वहां की पर्यटन आधारित अर्थ व्यवस्था पुनः पटरी आ सकें । इसके लिये वहां के लोगों और सैलानियों में पुनः विश्वास स्थापित करने के साथ ही टूर ट्रेवल एजेंसियों, टैक्सी टूर ऑपरेटर, होटल्स रेस्टोरेंट, घोड़ा चलाने वालों के आर्थिक नुकसान की भरपाई की ओर ध्यान देना आवश्यक प्रतीत होता है। अन्यथा इस घटना की प्रतिक्रिया के रूप में सैलानियों ने अपने टूर कैंसिल कर अन्य टूरिस्ट डेस्टिनेशन की ओर रुख करना शुरू भी कर दिया है। इस घटना के परिप्रेक्ष्य में पर्यटकों के फुटफॉल पर सीधा असर पड़ने की आशंका से फिलहाल इंकार नहीं किया जा सकता।

दूसरा महत्वपूर्ण बिन्दु है पड़ोसी पाकिस्तान की प्रतिक्रिया स्वरूप संभावित एक्शन- रिएक्शन पर सतत नजर रखकर पाक से लगी सीमाओं पर चौकसी बढ़ाई जाये। हालांकि जो रिपोर्टस सामने आ रही है उनके मुताबिक सेना को अलर्ट मोड पर रखा जाना अच्छा निर्णय है। साथ ही हरेक फैसलों में विपक्षी दलों और सुरक्षा विशेषज्ञों को सहभागी बनाने की महती जरूरत है। यह स्वागत योग्य है कि विपक्ष ने सरकार के साथ खड़ा रहने की मंशा जताई है तो सरकार भी इस दिशा में कदम उठा रही है। लेकिन हरेक कदम फूंक-फूंक कर रखना वक्त का तकाजा और जरूरत है।

अनट्रेंड ट्रेंड सेंटर

अनुपमा अनुश्री

लेखक साहित्यकार हैं।

आधुनिकता के नाम पर कुछ भी

जे नरेशन कोई भी हो, जो अच्छा है वही चलता है। अगर किसी की आंखों में दोष है या मतिभ्रम हो गया है कुछ देर के लिए तो लगेगा कि कुछ ऐसी चीज चल रही हैं जो नकारात्मक ध्वनि दे रही हैं और फिर भी चल रही है तो यह सुनिश्चित है कि वह पानी का बुलबुला है ज्यादा देर नहीं टिक सकता।

प्रमाण समय-समय पर मिलते रहते हैं अभी हाल ही में मनोज कुमार के निधन से सभी लोग भावुक हुए और हर जनरेशन ने तमाम उनसे जुड़ी हुई पोस्ट, वीडियो, यूट्यूब, इंस्टा, फेसबुक, ट्विटर पर पोस्ट किए। कारण देशभक्ति की जो लहर थी वह फिर से उभरी। जो जीवन मूल्य हैं, अच्छे सिद्धांत हैं, आदर्श हैं, वह पुनः पुनः जीवन में शामिल हो ही जाते हैं तभी मिलती है सही दिशा, शांति और सफलता।

तो बात इतनी सी है कि जनरेशन को चाहे कुछ भी नाम दे दो, साइलेंट, बूमर,एक्स जेन हो, मिलेनियल, जेनजी, अल्फा, बीटा या फिर गामा। चलेगा वहीं जो अच्छा है। खोटा सिक्का तो कभी नहीं चलता था। खोटे सिक्कों से सृष्टि नहीं चलती और खोटे सिक्कों को उखाड़ कर वक्त स्वयं फेंक देता है। उनके खुद के कर्म उन्हें उठाकर इस चलायमान सृष्टि के बाहर फेंक देते हैं। कुछ देर की चमक -दमक से भ्रमित नहीं होना चाहिए। शाश्वतता स्वयं पहचान है किसी की प्रमाणिकता और उत्कृष्टता की। थोड़ी देर के लिए हीरे पर धूल पड़ जाए तो उसका यह मतलब नहीं है कि वह हीरा नहीं है और चमकेगा नहीं! जैसे ही हवाएं रुख बदलेंगी, हीरा चमकने लगेगा क्योंकि यह उसकी शाश्वत प्रकृति है। बिल्कुल उसी तरह जैसे कभी-कभी सूर्य और चांद पर ग्रहण पड़ जाता है या फिर बादलों से ढक जाते हैं इसका यह मतलब नहीं कि वे चाँद या सूरज नहीं हैं! उनकी अपनी शाश्वत, सनातन प्रकृति है, जो सत्य है, वह धुव्र है, अटल है, निरंतर है।

इतने नासमझ, अनट्रेंड हैं कि भाषा को विकृत करके उसका पोस्टमार्टम करके आधुनिकता के नाम पर भाषाओं को तोड़- मरोड़ कर ट्रेंड का नाम दे रहे हैं। कहां जा रहे हैं, खुद को भी पता नहीं है कि कितने भटकाव, इल्यूजन में हो। एक और ट्रेंड है रील का। बेधड़क रील बनाए जा रहे हैं, कभी भी, कहीं भी, किसी भी सिचुएशन में!

खतरनाक से खतरनाक जगह पर खड़े होकर अपनी जान भी गँवा रहे हैं और रील बनाने का मोह खत्म नहीं हो रहा। युवा इस तरह से विवेक हीन, अंधा कैसे हो गया भारत का! शिक्षा का स्तर बढ़ा है। हर किसी को शिक्षा मिल रही है। हर तरह की सुविधा मिल रही है फिर भी पागलपन और यह मूर्खतापूर्ण हरकतें, अपराध खत्म नहीं हो रहे! इसकी ट्रेनिंग कहां से मिल रही है!

और जब ऐसे भेड़ चाल में फंसे हुए अनट्रेंड, किसी ट्रेंड को फॉलो करने लगते हैं तो फिर बंटाधार होगा। अपने मूर्खतापूर्ण, व्यर्थ के शौक के लिए इतनी खतरनाक स्थितियों में आ जाना, अपनी जान के साथ या दूसरों की जान के साथ खिलवाड़ करना कहां तक न्यायोचित है! फेमस होने के लिए, पैसों के लिए आप कुछ भी कर रहे हो विवेक-बुद्धि ताक पर रखकर, यह कौन सा भारत है!

शब्दों का सत्यानाश कर दिया हुआ है उनकी जगह पर उल्टे-पुल्टे शब्द और एबरेविएशंस (संक्षेपाक्षर) उपयोग हो रहे हैं! शब्द को ब्रह्म माना जाता है और भाषा वैज्ञानिक आधार पर बनी हुई हैं। क्या यह जानते हैं! हम नई पीढ़ी हैं तो ऐसे कैसे नए हैं जो अपनी सारी गौरवशाली प्राचीन संस्कृति, परंपराओं, सभ्यता, भाषा का सत्यानाश करने पर तुले हुए हैं! यह कौन सी मानसिक विकृति का परिचय दे रही है नई पीढ़ी! इसकी ट्रेनिंग इन्हें कहां से मिलती है बार-बार सवाल यही आ रहा है! आधुनिकता के नाम पर कुछ भी करेंगे क्या! सारी संस्कृति, सभ्यता, मर्यादा, संस्कारों को बेच खाएंगे! बिल्कुल वही बात हो गई कि जिस पेड़ पर बैठे हैं, उसकी जड़ को काट रहे हैं तो गिरेंगे धड़ाम से और कोई उठाने वाला भी नहीं मिलेगा।

भारत सबसे युवा देश है। यहां सबसे अधिक संख्या में युवाओं की है और ये तो अपने लिए खुद ही गड्ढा खोद रहे, भटके, बिखरे, भ्रम में उलझे हुए। इन्हें कुछ अच्छी ट्रेनिंग दी जाए ताकि हमारी सभ्यता, संस्कृति, संस्कार, राष्ट्र की गरिमा बच सकें, उनका संरक्षण इनके द्वारा हो सके अन्यथा तो इनका खुद का संरक्षण ही मुश्किल है धरती पर। कोई भी गलत शौक, दिखावा,फालतू के ट्रेंड बनाने और फालो करने से अच्छा है खुद को ट्रेंड करें अच्छे कार्यों की तरफ, अच्छी आदतों, श्रेष्ठ विचारधारा की ओर व उत्तरदायी नागरिक, सुखद भविष्य निर्माता बनें। भारत का गौरव बढ़े ऐसे आदर्श और कर्म ट्रेडिंग बनें।

नि:शुल्क हॉस्पिटल बेड, व्हीलचेयर आदि सामानों का शुभारंभ आज

बैतूल। पूज्य सिंधी पंचायत बैतूल के वरिष्ठ सदस्य स्व. जगदीश जसूजा की स्मृति में हॉस्पिटल बेड, व्हीलचेयर, वॉकर, स्टिक आदि अस्पताल के सामानों की निशुल्क सेवा का आज 25 अप्रैल को प्रातः 10 बजे रिलायंस स्मार्ट बाजार के पास गुरुद्वारा रोड बैतूल में बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल के हस्ते से शुभारंभ होगा। जसूजा परिवार के वरिष्ठ सदस्य बलराम जसूजा ने बताया कि हमारे परिवार ने निर्णय लिया है कि दुर्घटना, बीमार होने पर डॉक्टर की सलाह पर हमारे द्वारा अस्पताल का सामान जिसमें हास्पिटल बेड, व्हीलचेयर, वॉकर, स्टिक आदि सामानों को निःशुल्क उपलब्ध कराया जायेगा। जसूजा परिवार ने गणमान्य नागरिकों से इस कार्यक्रम में शामिल होने का आग्रह किया है।

स्व. दुर्गाताई उमप का श्रद्धांजलि कार्यक्रम आज

बैतूल। शहर के सदर क्षेत्र में चंद्रशेखर वार्ड लिंक रोड बैतूल के निवासी उमप जनरल स्टोर्स के संचालकगण सुधीर एवं प्रवीण (पिंटू) उमप तथा जिला न्यायालय बालौद में कार्यरत सुनील उमप की माताजी

दुर्गाताई मधुकरराव उमप का गत 12 अप्रैल 2025 को 76 वर्ष की उम्र में दुखद निधन हो गया था। वे अपने पीछे तीन पुत्र, एक पुत्री- दामाद एवं नाती-पोते से भरापूरा परिवार छोड़ गई। जिनका चौदहवीं एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रम आज शुक्रवार 25 अप्रैल 2025 को दोपहर 12 बजे से उनके निज निवास उमप जनरल स्टोर्स चंद्रशेखर वार्ड लिंक रोड सदर बैतूल में रखा गया है। श्रद्धांजलि एवं चौदहवीं कार्यक्रम के लिए शोकाकुल परिवार ने सभी से शामिल होकर दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना करने का आग्रह किया है।

उर्स पर्व पर आज नहीं लगेगा हाट बाजार, ग्राम सभा में लिया प्रस्ताव

बैतूल/ कोलगांव। बैतूल मुख्यालय की ग्राम पंचायत कोलगांव में उर्स पर्व पर पीर बाबा के स्थान पर लगने वाला हाट बाजार अब यथावत अपने स्थान पर ही लगाए जाने का प्रस्ताव ग्राम सभा में लिया गया है। उल्लेखनीय है कि ग्राम पंचायत कोलगांव की सरपंच के नेतृत्व में गुरुवार को ग्रामवासियों ने पंचायत सचिव को आवेदन सौंपकर हाट बाजार पूर्व स्थान पर ही लगाए जाने की मांग की थी। इसके बाद कोलगांव ग्राम पंचायत भवन में आयोजित ग्राम सभा में हाट बाजार को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। ग्राम सभा के दौरान सदस्यों ने बैतूल -आठनेर मार्ग पर आवाजाही को ध्यान में रखते हुए प्रस्ताव रखा कि 25 अप्रैल को उर्स पर्व पर कोलगांव में पीर बाबा के स्थान पर हाट बाजार न लगाकर पूर्वानुसार यथावत स्थान पर बाजार लगाया जाएगा। इस दौरान सर्वसम्मति से ग्राम सभा के प्रस्ताव को अनुमोदित किया गया। इस संबंध में ग्राम पंचायत द्वारा हाट बाजार में पुलिस सुरक्षा बल की व्यवस्था कराए जाने के लिए बैतूल बाजार पुलिस थाने में पत्राचार किया गया है।

बिरुल बाजार में हुआ कृषक संध्या का आयोजन

बैतूल। मुलताई के प्रभात पट्टन विकासखंड के ग्राम बिरुल बाजार में सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया एवं जिला प्रशासन बैतूल के संयुक्त तत्वावधान में कृषक संध्या का आयोजन कराया गया। जिसमें क्षेत्रीय प्रबंधक

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया नर्मदापुरम रजत मिश्रा, जिला अग्रणी प्रबंधक आशुतोष कुमार सिंह, कृषि यंत्री बैतूल डॉ. प्रमोद मीणा, सहायक संचालक कृषि विभाग रामवीर सिंह राजपूत, सुरेंद्र परतेती, विकासखंड पशु चिकित्सा अधिकारी पवन कवरेती एवं ग्राम सरपंच जीवन बनकर, किसान साथी एवं ग्रामीण जन उपस्थित थे। कार्यक्रम में किसानों को विविध योजनाओं की जानकारी प्रदान कर की गई। कार्यक्रम में विभिन्न विभाग के अधिकारियों ने शासकीय योजनाओं के बारे में कृषकों को अवगत कराया। कार्यक्रम में केसीसी खातों के नवीनीकरण, पशुपालन केसीसी एवं नरवाई प्रबंधन के व्यवस्था के बारे में जानकारी दी गई। अंत में गणमान्य नागरिक एवं अधिकारियों द्वारा किसानों को नरवाई मुक्ति के लिए शपथ भी दिलाई गई।

जिले में 43 किसानों पर दर्ज हुई एफआईआर, कई किसानों पर जुर्माना

फिर भी किसानों में जागरूकता का अभाव, कार्रवाई का असर नहीं, प्रतिबंध के बाद भी जिले में जल रहे खेत

संजय द्विवेदी, बैतूल। गेहूं की फसल की कटाई के बाद खेतों में उसके डंठलों को दूर करने किसान खेतों में आग लगते है, जिस पर प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी कलेक्टर ने रोक लगाई है, लेकिन उस रोक का आदेश का किसी पर असर होता नहीं दिख रहा। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिदिन भीषण आग लगी दिखाई देती है, जो जलने से खेतों में लगी गेहूं की डूंठ को जला देती है और खेत काले रंग में तब्दील हो जाते है। कुछ जगह आग ऐसी भी देखने मिली है जिनको लगाया तो सुविधा के लिये था, लेकिन बाद में वह मुसीबत बन गई, क्योंकि उस आग ने खेतों में लगी नरवाई तो साफ की है, लेकिन आग ने कई खेतों में बने मकानों सहित अन्य वस्तुओं को जलाकर राख कर दिया और बचाव के लिये लोगों को मशक्कत के साथ फायर बिग्रेड की मदद लेनी पड़ी। हालांकि नरवाई में आग लगाने वाले किसानों को चिन्हित कर उन पर जुर्माना, नोटिस और एफआईआर दर्ज की जा रही हैं। किन्तु नरवाई में आग लगाने की जगह क्या बेहतर विकल्प हो सकते है और कैसे उपलब्ध हो सकते हैं, इसको लेकर किसानों को कोई जानकारी नहीं हैं। गौरतलब है कि वर्तमान समय में हार्वेस्टर से कटाई होती हैं इसलिए भी किसान नरवाई में आग लगाकर खेत साफ कर रहे है।

आग लगाने से मिट्टी के पोषक तत्व होते है खत्म- रबी सीजन की कटाई के बाद गेहूं वाले खेत में खड़ी नरवाई को जलाने पर कलेक्टर द्वारा प्रतिबंध लगाया गया है, फिर भी किसान आग लगा रहे हैं। इसका उदाहरण जिले के विभिन्न ब्लाकों में नरवाई जलाने पर दर्ज एफआईआर है, जो स्पष्ट कर रही है कि जिले में प्रतिबंध के बाद भी नरवाई में आग लग रही है। उल्लेखनीय है कि वर्तमान में मजदूरी महंगी होने और मजदूर न मिलने के कारण किसान सामान्य तौर पर हार्वेस्टर पर ही ज्यादा निर्भर होते जा रहा हैं और इसलिए अब खेतों में आग लगाने का चलन बढ़ गया हैं। खेतों में नरवाई जलाने के कई साइड इफेक्ट है। जिसमें इससे आगजनी का खतरा तो है ही, लेकिन मिट्टी की उर्वरता भी प्रभावित होती हैं। शासन इस सिस्टम को रोकना चाहता हैं, लेकिन इसके

लिए किसानों को जागरूक करने और उन्हें विकल्प उपलब्ध कराने में नाकाम नजर आ रहा हैं। यही कारण है कि एफआईआर दर्ज होने के मामले सामने आने के बाद भी किसान नरवाई में आग लगाने से अपने को रोक नहीं पा रहे।

आगजनी की घटनाओं को नजरअंदाज कर रहे किसान - नरवाई की आग से खड़ी फसलों के साथ घरों में आग लगने की घटनाएं भी हो रही हैं। फिर भी किसान इसे नजरअंदाज कर रहे हैं। किसान फसल काटने के बाद नरवाई में आग लगा रहे हैं। इससे आग जलती हुई और धुआं उठता दिखाई दे रहा है। जिले में दिन हो या रात, किसी भी समय खेतों में आग की लपटें उठती हुई दिखाई देती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में नरवाई जलाई जाती है, तो उसकी गर्मी का एहसास सडक़ से गुजरने वाले राहगीरों को भी होता है। कई बार चिंगारियां उड़ने से खेतों में आग लग जाती है। लेकिन इस पर रोक नहीं लग पा रही है। किसान अभी भी खेतों में नरवाई जला रहे है। हर साल गेहूं की कटाई शुरू होते ही प्रशासन द्वारा नरवाई जलाने पर प्रतिबंध लगा दिया जाता है, लेकिन फिर भी नरवाई जलाने पर रोक नहीं लग पा रही है।

इस धारा के तहत होती है एफआईआर- भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 223 में लोक सेवक द्वारा विधिवत प्रख्यापित आदेश की अवज्ञा के लिए सजा का प्रावधान है। यदि ऐसी अवज्ञा से मानव जीवन, स्वास्थ्य, सुरक्षा को खतरा उत्पन्न होता है या दंगा होता है, तो सजा एक वर्ष तक का कारावास, 5,000 रुपये तक का जुर्माना या दोनों हो सकती है। वैसे प्रशासन नरवाई से निपटने के लिए हैप्पी सीडर या सुपर सीडर का विकल्प प्रस्तुत कर रहा हैं। यह सीडर नरवाई को मिट्टी के साथ गहराई तक पलटकर उसे खाद में बदलने का काम करता हैं। प्रशासनिक सिस्टम में 30 गांव को चयनित कर नरवाई जलाने से मुक्त कर दिया गया हैं और यह दावा भी किया गया हैं कि बैतूल विकासखंड में 100 एकड़, शाहपुर में 200 एकड़, चिचोली में 60, घोड़ाडोंगरी में 330, मुलताई में 59, आमला में 21, पट्टन में 10, आठनेर में 10 और भीमपुर में 200 एकड़ में सुपर सीडर या हैप्पी सीडर से बोवनी की गई हैं।

नरवाई जलाने पर एफआईआर दर्ज- जिले में नरवाई जलाने वाले किसानों पर प्रशासन ने सख्ती दिखाते हुए एफआईआर भी दर्ज की है। अभी तक ऐसे 43 किसानों पर एफआईआर दर्ज की है, जिन्होंने प्रतिबंध के बाद भी नरवाई को जलाया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार जिले के 19 अप्रैल तक आमला अनुविभाग में 15 किसानों पर एफआईआर दर्ज की गई है। इसी तरह बैतूल अनुविभाग में 5, शाहपुर में 5, मुलताई में 15, भैंसदेही में 2 किसानों पर नरवाई जलाने के कारण एफआईआर हुई है। जिले में कुल 43 किसानों पर अब तक नरवाई जलाने के मामले में कार्यवाही हुई है। इसके अलावा प्रशासन ने जुर्माना लगाने और नोटिस देने की कार्यवाही भी की है।

इनका कहना है -

पराली को रोकने हेतु हाल ही में मंत्रिमंडल स्तर पर हुई बैठक में लिये गये निर्णयानुसार कृषि विभाग, राजस्व विभाग एवं प्रशासन द्वारा समय-समय पर पंचायत स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम चलाये जा रहे है जिसमें किसानों को भूसा मशीन, रोटावेटर तथा अन्य कृषि उपकरणों का उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है और इसके लिए उन्हें 1500 से 5000 रुपये प्रति एकड़ तक अनुदान भी दिया जा रहा है, जिससे पर्यावरण प्रदूषित न हो। इसके अलावा जिन किसानों द्वारा नरवाई जलाई जा रही है, उन पर न्यूनतम 2500 से लेकर अधिकतम 15000 रुपये एनजीटी के निर्देशानुसार जुर्माना किया जा रहा है। साथ ही ऐसे किसानों पर एफआईआर कर रहे है और नोटिस भी दे रहे है।

- शैलेन्द्र बडोनिया,
अनुविभागीय अधिकारी राजस्व

आयुष विभाग द्वारा महिला आईटीआई में प्रजनन स्वास्थ्य पर दिया प्रशिक्षण

317 किशोरी बालिकाओं ने इस महत्वपूर्ण विषय पर व्याख्यान का लाभ प्राप्त किया

बैतूल। शासकीय एकलव्य महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था बैतूल में 24 अप्रैल को आयुष विभाग द्वारा प्रजनन स्वास्थ्य अंतर्गत आरटीआई, एचआईवी, एड्स, परिवार नियोजन के संबंध में कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ माता सरस्वती एवं भगवान धन्वंतरि के पूजन से किया गया। कार्यशाला में संस्था के प्रधानाचार्य रेवा शंकर पंडाग्रे सहित समस्त स्टाफ उपस्थित रहे। संस्था के शिक्षक गणों द्वारा समस्त चिकित्सकों का स्वागत स्वागत गीत एवं पुष्प गुच्छ भेंट कर किया गया। डॉक्टर अतुल राय द्वारा प्रजनन स्वास्थ्य माड्यूल की प्रस्तावना दी गई। डॉ लक्ष्मी किशनानी ने प्रजनन तंत्र संक्रमण एवं यौन संचारित संक्रमण विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया। डॉ विशाल वर्मा

द्वारा एचआईवी ,एड्स एवं हेपेटाइटिस बी के संक्रमण, रोकथाम पर व्याख्यान दिया । अंत में डॉ विनीता महादुले द्वारा परिवार नियोजन के साधनों के विषय में जानकारी दी गई। संस्था से कुल 317 किशोरी बालिकाओं ने इस महत्वपूर्ण विषय पर व्याख्यान का लाभ प्राप्त किया। व्याख्यान की पश्चात् चिकित्सकों द्वारा प्रश्नोत्तरी कालखंड भी रखा गया ।इस प्रकार कार्यक्रम के सफलतापूर्वक संपन्न कराने हेतु प्रधानाचार्य द्वारा जिला आयुष अधिकारी डॉक्टर योगेश चौकीकर को धन्यवाद दिया गया।

द गार्जियन फोरम ने दी श्रद्धांजलि, आक्रोश व्यक्त

भोपाल। वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा व सेवा में समर्पित द गार्जियन फोरम ने पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की। फोरम की बैठक में आतंकियों की कायराना हरकत पर आक्रोश व्यक्त किया और सीमा पार आतंक के खिलाफ सख्त कदम उठाने की केंद्र सरकार से मांग की। बैठक में फोरम के वरिष्ठ पदाधिकारी गण चद्रप्रकाश गर्ग, श्री राकेश गोहिल, अंजना बनखड़े, कल्पना जैन गोहिल, पीएल रघुवंशी, मोहिनी चौहान, रामकृष्ण गुप्ता सहित फोरम के कई सदस्य शामिल हुए और मृतकों के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए।

बैतूल में 11 स्टांप विक्रेताओं पर गिरी गाज

स्टाम्प विक्रेताओं के खिलाफ अनुज्ञप्ति निलंबन की हुई कार्रवाई

बैतूल। कलेक्टर परिसर एवं जिला न्यायालय परिसर बैतूल में कार्यरत 11 अनुज्ञप्तिधारी स्टाम्प विक्रेताओं के विरुद्ध बड़ी प्रशासनिक कार्रवाई की गई है। वरिष्ठ उप पंजीयक द्वारा किए गए औचक निरीक्षण के दौरान कई स्टाम्प विक्रेताओं को उनके निर्धारित अनुज्ञप्ति स्थल पर अनुपस्थित पाया गया। इन स्टांप विक्रेताओं का यह कृत्य मध्य प्रदेश स्टाम्प नियम, 1942 के नियम 27 एवं 29 का उल्लंघन है, जिसके तहत निलंबन की कार्रवाई की गई है। जिला पंजीयन एवं अनुज्ञप्ति प्राधिकारी ने बताया कि निरीक्षण के दौरान संबंधित स्टाम्प विक्रेताओं द्वारा अनुज्ञप्ति की शर्तों का पालन नहीं किया जाना तथा कार्यालयीन समय में अपने कार्यस्थल पर अनुपस्थिति, जनसेवा में लापरवाही एवं प्रशासनिक निर्देशों की अवहेलना की गई है। इस गंभीर लापरवाही को ध्यान में रख त्वरित निर्णय लेते हुए स्टाम्प विक्रेताओं की अनुज्ञप्तियां 24 अप्रैल 2025 से आगामी आदेश तक निलंबित कर दी है। जारी आदेश के अनुसार लक्ष्मीनारायण पवांर सिविल कोर्ट बैतूल, श्रीमती गीता बारपेटे जिला न्यायालय परिसर, उमेश पिता स्व.भीमराव गलफट कलेक्टर परिसर बैतूल, दिनेश कुमार जैन जिला न्यायालय परिसर बैतूल, संदीप पिता दीपचंद साहू कलेक्टर परिसर बैतूल, प्रभुदास पिता लुंगाजी बर्डे जिला न्यायालय बैतूल, विजय कुमार पिता रामचन्द्र लिखितकर जिला न्यायालय बैतूल, कु.शबाना परवीन अली पिता स्व. सैयद शाहिद हुसैन सिविल कोर्ट बैतूल, राजेश कुमार पिता दीपचंद साहू कलेक्ट्रेट परिसर बैतूल, विनायकराव पिता यादवराव माकोडे जिला न्यायालय बैतूल, श्रीमती अनिता पिता मोहनलाल सोनी जिला न्यायालय बैतूल शामिल है।

तूल पकड़ रहा है नपा में कमीशनखोरी के आरोप का मामला

महिला पार्षद अंजली शिवहरे ने सौंपा ज्ञापन

बैतूल/मुलताई। नगर पालिका मुलताई में पदस्थ सहायक ग्रेड 2 अधिकारी जीआर देशमुख ने हाल ही में सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर कर नगर पालिका में कमीशन के चलते फाइलों का अंधेरे में भुगतान का आरोप लगाया था। यह एक गंभीर आरोप था, किंतु यह माना जा रहा था कि व्हाट्सएप पर नगर पालिका परिवार ग्रुप में डाली गई। इस पोस्ट का अध्याय चर्चाओं के बाद समाप्त हो जाएगा, लेकिन अब यह मामला तूल पकड़ता दिखाई दे रहा है। आज विवेकानंद वार्ड की पार्षद अंजली सुमित शिवहरे ने जिला कलेक्टर के नाम ज्ञापन एसडीएम को सौपकर राजस्व निरीक्षक देशमुख द्वारा सार्वजनिक रूप से लगाए गए कमीशनखोरी के आरोपी की जांच की मांग की है। नगरपालिका की पूर्व सामान्य प्रशासन विभाग की सभापति एवं पार्षद अंजली शिवहरे ने कलेक्टर के नाम एसडीएम को सौपे ज्ञापन में कहा है कि नगर पालिका मे कार्यरत सहायक ग्रेड 2 अधिकारी जीआर देशमुख द्वारा नगरपालिका मुलताई के व्हाट्सअप ग्रुप में कमीशन नहीं देने के कारण उनका लंबित वेतन भुगतान नहीं करने एवं अन्य भुगतानों में कमीशनखोरी के गंभीर आरोप लगाए गए। सार्वजनिक रूप से लगाए गए आरोपों से न केवल नगरपालिका परिषद मुलताई की छवि धूमिल हुई है, साथ ही नपा के सत्ताधारी जनप्रतिनिधि एवं अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर भी गंभीर सवालिया निशान उठ खडे हुए है। जिसके चलते उक्त आरोपों की निष्पक्ष जांच कराकर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जानी चाहिए।

कमीशन की फाइल रहे, तो अंधेरे में होता है भुगतान- अंजली सुमित शिवहरे ने ज्ञापन के

साथ सोशल मीडिया पर डाली गई पोस्ट का स्क्रीनशॉट भी जांच के लिए एसडीएम मुलताई को सौपा है। जिसमें कहा है कि कमीशन के चक्कर में 13 वर्ष पुराना वेतन 4 माह से बनकर फाइल धूल खा रही है। मगर 16000 रुपए भुगतान करने के लिए नहीं है। कमीशन की फाइल रहे तो, अंधेरे में भी भुगतान चुपके से हो जाता है।

इनका कहना है-

मैंने जो कहना था, कह दिया था और कहने के बाद इसे मैं भूल चुका हूं। इससे अधिक इस मामले में मुझे कुछ नहीं कहना है।

- जीआर देशमुख,
राजस्व निरीक्षक नगर पालिका मुलताई

एनसीईआरटी की पुस्तकें स्कूलों में चलाने वालों को किया सम्मानित

सुबह सवेरे सोहागपुर। अभिभावक एसोसिएशन सोहागपुर के तत्वावधान में अपने द्वितीय चरण में उन स्कूल संचालकों एवं माननीय प्राचार्यों को पुष्प माला एवं सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया ।जिन स्कूलों में अधिकांश एनसीईआरटी की पुस्तकें ही चलती है। इस माध्यम से शिक्षा जगत में संदेश देना है ।कि ऐसी कई निजी स्कूल संचालक हैं ।जो अपने छात्रों की किताबों में कोई धांधली न करते हुए । कम से कम कीमत वाली पुस्तकें ही चलाकर अभिभावकों राहत प्रदान करते हैं । इसी संदर्भ को लेकर अभिभावक एसोसिएशन संयोजक विशाल गोलानी , गजेंद्र ठाकुर , गणेश अहिरवार , पंडित शिवकुमार पुरोहित , राकेश गोस्वामी , रानू मालवीय , सचिन विश्वकर्मा , उत्तम घारामी , कमल किरार , राकेश सराठे , किशन मेहरा , हरिओम पटेल आदि ने विवेकानंद पब्लिक स्कूल संचालक अनिल गहरईया , प्राचार्य श्रीमती अनिता गहरईया,सरस्वती शिशु मंदिर संचालक सुभाषचन्द्र बोस शिक्षा समिति , प्राचार्य अशोककुमार दुबे,नर्मदांचल पब्लिक स्कूल सोहागपुर , संचालक जितेंद्र सिंह राजपूत को प्रमाण पत्र प्रदान करते फूल मालाओं से स्वागत किया। अभिभावक एसोसिएशन ने समस्त स्कूलों से आग्रह किया है कि छात्र एवं अभिभावकों के लिए एनसीईआरटी की पुस्तकों को शीघ्र लागू करें। उल्लेखनीय है इसके पूर्व अभिभावक एसोसिएशन ने कलेक्टर ने एसडीएम अनिल जैन को ज्ञापन सौंपा था।

सकल हिन्दू समाज ने ज्ञापन सौंपा

पहलगाम घटना का लेकर आक्रोश, पाकिस्तान को सबक सिखाने की मांग, फौज को खुली छूट दी जाए

सुबह सवेरे सोहागपुर। सोहागपुर नगर पहलगाम की घटना से उद्वेलित है। इससे सकल हिन्दू समाज में आक्रोश व्याप्त है।इसी संदर्भ को लेकर आज सकल हिन्दू समाज के सैकड़ों नागरिकों ने जुलूस निकालकर अनुविभागीय अधिकारी अनिल कुमार जैन को ज्ञापन सौंपा। राष्ट्रपति को संबोधित करते ज्ञापन में आग्रह किया गया है।कि हम सभी भारत के नागरिक पहलगाम में हुई देश के नागरिकों एवं पर्यटकों की निर्मम एवं दु ःखद हत्या का विरोध करते हैं। घटना की कड़ी निंदा करते हैं ।भविष्य में ऐसी गंभीर घटना की पुनरावृत्ति ना हो जिसके लिए भारत सरकार को कड़े कदम उठाने की आवश्यकता है ।हम सभी नागरिक मांग करते हैं ।कि हत्या में सम्मिलित आतंकवादियों को सरेआम मौत की सजा दी जाए । तथा आतंकवादियो के आकाओं को भी चुन चुन कर मारा जाए । वहीं आतंकवादियों को संरक्षण और पनाह देने वालों के विरुद्ध भी सख्त कार्रवाई हो। पाकिस्तान भारत देश में आतंकवाद फैला रहा है ।पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए भारतीय सेनाओ को खुली छूट दी जाए। आतंकवाद को पनाह देने वाले पाकिस्तानी सेना जवानों को मौत के घाट उतारा जाए। महोदया जी हम ऐसी घटना से बहुत आहत है । आपसे अनुरोध करते हैं

।कि भारत सरकार सख्त कदम उठाकर देशवासियों को बताएं ।हम सब सरकार के साथ है । सरकार एक-एक नागरिक की मौत का बदला लेने में सक्षम है पाकिस्तान कड़ा प्रहार किया जाए। जिससे पाकिस्तान जैसा देश दोबारा ऐसी हिमाकत न कर सके। हम सभी भारतवासी भारत सरकार एवं शहीद परिवारों के साथ हैं। अतः निवेदन है कि सख्त कार्रवाई करते हुए देशवासियों को भरोसा दिलाने की कृपा करें । देशवासी आश्वस्त हैं कि भारतीय सरकार निरीह देशवासियों का बलिदान खाली नहीं जाएगा।हम बदला लेने के लिए सक्षम है। लेकिन देशवासी त्वरित कार्यवाही चाहते हैंसोहागपुर के समस्त नागरिक। इस अवसर पर राजनैतिक पार्टियों के नेता, पदाधिकारी,व्यापारी गण, वकील गण, समाजसेवी, युवा आदि उपस्थित थे। इसके पूर्व बुधवार को इसी संदर्भ में मशाल जुलूस निकाला गया था।

समाज सुधारक संत सेन भगत

गोविन्द सेन

संत सेन भगत मध्यकाल के सामाजिक उत्थान के पुरोधा थे । उन्होंने जातीय स्वाभिमान के साथ श्रम के मूल्य की प्रतिष्ठा स्थापित की। श्रम के महत्व को खासकर नाई के कार्य के महत्व को रेखांकित किया। वे नाई कुल में जन्मे थे। हज़ामत करना उनका काम था। उन्हें हजामत करने में शर्म महसूस नहीं की। उन्होंने कभी अपनी जाति नहीं छिपाई । वे जो काम करते थे उसे उजला मानते थे । वे अपनी जाति के सम्बन्ध स्पष्ट कहते हैं-

नाई कुल में जनम्यो, छौर करम को काज ।
सेन कहे ऊजल करम, नहीं पाप को साज ॥

यह भी आगाह करते हैं कि सेवा कर्म करते हुए अपमानजनक व्यवहार बर्दाश्त मत करो, क्योंकि जजमान भी हमारे जैसा ही है। वह ऐसा श्रेष्ठ नहीं कि हमारा अपमान करें। सेन कहते हैं-

करो खवासी मान ती, करो न ओछी बात।
सेन कहे जजमान की, सम सरखी औकात ॥

संत सेन भगत रामानंद के बारह शिष्यों में से एक थे। उनका जन्म संवत् 1357 में बांधवगढ़ मध्यप्रदेश में माना जाता है। सच्चे संत काल का अतिक्रमण करते हैं। उनकी वाणी सदैव प्रासंगिक बनी रहती है। इतने बरसों बाद भी लगता है कि उन्होंने आज की स्थितियों पर ही टिप्पणी की हो।

मध्यकाल में भारतीय समाज पाखण्ड, आडम्बर, कर्मकांड, छुआछूत, नरबलि, पशुबलि, जातिगत भेदभाव, नारी प्रताड़ना, धार्मिक भेदभाव, दास प्रथा, पर्दा-प्रथाआदिअनेक बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। ऐसे समय में संत सेन भगत ने प्राचीन रूढ़ियों, पाखंडों, आडम्बरों को समाप्त करने और सामाजिक सुधार का बीड़ा उठाया द्य

संत सेन भगत के विचार उनके दोहों में व्यक्त होते हैंद्य वे समाज में व्याप्त ऊँच-नीच की भावना को सिरे से ख़ारिज करते हैं। छोटे-बड़े के विचार को तुच्छ मानते हैं। उनकी दृष्टि में सभी समान हैं, सभी बराबर हैं। वे स्पष्ट कहते हैं-

छोट-मोट को सोचणो, हे अति तुच्छ विचार।
सैना फरको है नहीं, साहिब के दरबार।।

सेन भगत बाह्य आडम्बर के खिलाफ थे। वे कहते हैं महाकाल और केदारेश्वर के दर्शन से कोई फायदा नहीं होगा। सच यह है कि भगवान् तो तेरे भीतर ही बैठे हैं। अत- दर्शन हेतु अन्यत्र जाना व्यर्थ ही है।

महाकाल दरसन कर्यो, केदारा को ध्यान।
सेन भगत साँची कहूँ, घट भीतर भगवान ॥

सेन कहते हैं-प्रतिदिन स्नान करते हैं, लम्बा तिलक लगाते हैं। जिसके हृदय में दया नहीं है, वह प्रतिदिन पाप कर्म करता है। यह आडम्बरयुक्त व्यक्ति कहलाता है।

नित न्हावे पूजा करे, लाम्बो तिलक लगाय।
सेन दसौ हिरदै नहीं, नत दन पाप कमाय ॥

जो लोग जटाएँ बढ़ाकर या मूँड़ मुँड़ाकर मदहोश बने रहते हैं। खुद तो पाप में संलग्न रहते हैं तथा जग में दूसरों को दोष देते हैं, वे लोग आडम्बर करते हैं।

जटा बढ़ा भमता फिरे, मूंड मुँडा मदहोस ।
सेना खुद पापो करे, जग ने देवे दोस ॥

सेन भगत स्वर्ग-नरक की अवधारणा को भी नकारते हैं। वे कहते हैं स्वर्ग-नरक बेमतलब की बात है । करनी-भरनी दोनों यहीं है ।

नरग-सरग बेमतलबां, दोई धरा मुकाम।
सेन भगत साँची कहूं, करनी-भरनी धाम।।

सेन भगत सामाजिक समानता पर बल देते हैं। वे जातिगत असमानता ही नहीं, धार्मिक असमानता को भी व्यर्थ मानते हैं। सभी जातियाँ बराबर हैं और सभी धर्म भी। मनुष्यता से बढ़कर कोई अन्य धर्म नहीं है। उनकी नज़र में सभी धर्म एक हैं। दूसरों का हित करने से बड़ा कोई धर्म नहीं। तुलसीदास स्वयं लिखते हैं-'परहित सरिस धरम नहीं भाई। परपीड़ा सम नहीं अधमाई।'

सेन भगत कहते हैं-मैं सच कहता हूँ कि दुनिया में एक ही धर्म और एक ही मजहब है। राम-रहीम भी एक हैं। कृष्ण-करीम भी एक हैं। हमने वृथा भिन्न-भिन्न कहकर भेद उत्पन्न कर दिये हैं।

एक धरम, एकहि मजब, एकहि राम रहीम।
सेन भगत साँची कहूँ, एकहि कृसन करीम ॥

हम चाहे आरती करें, चाहे नमाज पढ़ें, ईश्वर को कोई एतराज नहीं है। वह तो मन की शुद्धता देखता है।सेन भगत कहते हैं-

चाहे कर लो आरती, चाहे पढ़ें निमाज।
सेन भगत साँची कहूँ, उसे नहीं इतराज ॥

सेन भगत मन की शुद्धता पर बल देते हैं। कहा भी गया है-मन चंगा तो कठौती में गंगा। उनकी दृष्टि में मन की निर्मलता ही मुख्य है बाकी सब आडम्बर हैं। वस्त्र खूब उजले धो लिये, तन को भी खूब मल-मलकर स्वच्छ कर लिया। सेन भगत कहते हैं-मैं सच कहता हूँ कि भीतर घट में (खेह) मैल भरा है। उसको धोना आवश्यक है।

वस्तर धोवे ऊजला, मल-मल धोवे देह।
सेन भगत साँची कहूँ, भरी भीतरां खेह ॥

संत सेन भगत गाँजा-भाँग या मद्य का नशा हो,हर तरह के नशे को बुरा मानते हैं द्य वे कहते हैं कि जो व्यक्ति मद्य पान कर अपशब्द बोल-बोलकर धमाल करता है, वह न तो खुद खुश रह पाता है, न घर-परिवार सुखी रह पाता है।

मद्यपान मद पी दुरवचनी करे, करतो फिरे धमाल ।
सैना ना खुद खुस रहे, ना घर रहे खुसाल ।।

हर महापुरुष का सन्देश किसी एक जाति-धर्म और समाज से बंधा हुआ नहीं होता। उसके सन्देश अखिल मानवता के लिए होते हैं। उनका दृष्टिकोण उदार होता है द्यसेन भगत के इन संदेशों पर समाज के हर वर्ग को ध्यान देना चाहिए जिससे वसुधैव कुटुम्बकम् का भारतीय आदर्श जमीन पर उतर सके। संत सेन भगत के ये सन्देश हमारे लिए प्रकाशस्तम्भ की तरह हैं।

एम्स भोपाल में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई वार्षिक डिस्सेक्शन प्रतियोगिता

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में एनाटॉमी विभाग द्वारा एमबीबीएस प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए वार्षिक डिस्सेक्शन प्रतियोगिता का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में छात्रों को विभिन्न समूहों में बाँटकर शरीर के दिए गए भागों पर वैज्ञानिक ढंग से डिस्सेक्शन करने का अवसर प्रदान किया गया। डिस्सेक्शन का अर्थ होता है - मानव शरीर को सावधानीपूर्वक खोलकर उसके भीतरी अंगों, नसों, मांसपेशियों व संरचनाओं का अध्ययन करना। चिकित्सा शिक्षा में यह एक अत्यंत आवश्यक प्रक्रिया है, जिससे छात्रों को शरीर की संरचना और कार्यप्रणाली को प्रत्यक्ष रूप से समझने का अवसर मिलता है।

प्रतियोगिता में अन्य विभागों से आमंत्रित तीन संकाय सदस्यों ने निर्णायक की भूमिका निभाई और उनके सम्मिलित अंकों के आधार पर विजेता टीमों का चयन किया गया। इस वर्ष प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली टीम के सदस्य थे । अमीना आरिफ, देवांश चौरसिया, कन्हैया, मृनिमायी योगेश, प्रियांश चित्तोरा, सलमान अहमद, सृजन कुमार व उत्कर्ष महादेव। द्वितीय स्थान पर रही टीम में अभय गुप्ता, अंशिका सिंह, गौरव अग्रवाल, लव शुक्ला, नयन पाण्डेय, रमेश कुमार, सवार्निक शर्मा, स्वरुप मुरलीधर व विकास प्रजापति सम्मिलित रहे। तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों में अगवाल शिवम, आयुष राय, हर्ष धाकड़, वकार युनुश, पाटिल सार्थ, ऋषि कुमार, शिवम यादव व तनिषा सिंघल शामिल थे। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी छात्रों का प्रयास सराहनीय रहा। विभाग द्वारा यह भी निर्णय लिया गया है कि प्रतियोगिता के दौरान तैयार किए गए श्रेष्ठ प्रतिरूप को विभागीय संग्रहालय में प्रदर्शित किया जाएगा, जिससे अन्य छात्रों को भी इसका शैक्षणिक लाभ मिल सके। इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने विजेता टीमों को पुरस्कृत किया एवं उपस्थित छात्रों को संबोधित करते हुए कहा, ऐसे शैक्षणिक आयोजनों से छात्रों को न केवल विषय की गहरी समझ मिलती है, बल्कि उनकी व्यावसायिक दक्षता में भी महत्वपूर्ण सुधार होता है। यह प्रतियोगिता चिकित्सा शिक्षा में गुणवत्ता की दिशा में एक प्रभावी प्रयास है। मैं उन सभी देहदाताओं का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिनके अमूल्य योगदान से हमारे छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हो रहा है।

ग्रामीण क्षेत्र के उपभोक्ताओं को मिलेगा मात्र 5 रुपये में नवीन विद्युत कनेक्शन

'सरल संयोजन पोर्टल' के माध्यम से करना होगा आवेदन

भोपाल (नप्र)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी कार्यक्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्र के उपभोक्ताओं को अब मात्र 5 रुपये में नवीन घरेलू कनेक्शन उपलब्ध कराना शुरू कर दिया है। कंपनी ने कहा है कि ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले उपभोक्ताओं को अब केवल 5 रूपये में नवीन विद्युत कनेक्शन उपलब्ध कराया जा रहा है। यह नया घरेलू कनेक्शन उन लोगों को मिलेगा जो कि मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के घरेलू फीडर से नियमानुसार कनेक्शन लेने की पात्रता रखते हैं।

अंधे मोड़ पर नर्मदा जल परियोजना का गड्ढा मौत को निमंत्रण देता

सुबह सवेरे सोहागपुर। यहां से करीबन 12 किलोमीटर दूर ग्राम ईश्वरपुर अंधे मोड़ पर सोहागपुर नर्मदा जल योजना की पाईप लाइन का गड्ढा मौत को निमंत्रण की जनहानि की तरफ इशारा कर रहा है। इस गड्ढे से पानी बहता रहता है।इस संबंध में ग्राम ईश्वरपुर के समाजसेवी भाईजी अहिरवार ने बताया कि नर्मदा जल पाइपलाइन परियोजना ग्राम ईशरपुर से सोहागपुर लाई गई है। उक्त पाइप लाइन ग्राम ईशरपुर से सोहागपुर पहुच पक्की सड़क के बीच में टूटकर गहरा गढ्ढा बना गया है जिसमे पानी निकलता रहता है!

यह गड्ढा पक्की सड़क के अंधे मोड के बीचोंबीच मे गहरा एवं चौडा है । इस रास्ते में वाहन फंस रहे हैं। इससे जनहानी दुर्घटना हो सकती है।इस संबंध में नगर पंचायत परिषद सोहागपुर के अधिकारी एवं कर्मचारियों को भी ज्ञात है । लेकिन इसे सुधारने की कोशिश अभी तक नहीं की गई है।शायद नर्मदा जल परियोजना के अधिकारियों को शायद किसी दुर्घटना का इंतजार है। तभी उक्त गड्ढे से नागरिकों को निजात मिलेगी। उल्लेखनीय है इस मार्ग पर प्रतिदिन सैकड़ों नागरिक आना जाना करते हैं।

पंचायतों को आत्मनिर्भर बनाने कार्य करें पंच और सरपंच : मंत्री पटेल

भोपाल (नप्र)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास, श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने गुरुवार को रायसेन जिले की सांची जनपद पंचायत के ग्राम सिलपुरी में आयोजित पंचायत प्रतिनिधियों का प्रशिक्षण/जनसंवाद उन्मुखीकरण कार्यक्रम सह सम्मान समारोह का कन्या-पूजन और दीप-प्रज्जवलन कर शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष श्री यशवंत मीणा सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारी/कर्मचारी एवं नागरिक उपस्थित थे। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि हमारी पंचायत व्यवस्था आत्मनिर्भर व स्वाबलंबी होनी चाहिए। सभी अपने ग्राम को स्वाबलंवी और आत्मनिर्भर बनाने के लिए कार्य करें। उन्होंने पंच-सरपंचों को संबोधित कराते हुए कहा कि ग्राम के विकास के लिए योजना बनाकर काम करें, राशि की कमी नहीं है। ग्राम के विकास के लिए राशि का उपयोग इस प्रकार करें कि ग्राम का विकास हो और ग्रामीणों का भविष्य बेहतर हो।

मंत्री श्री पटेल ने कहा कि पंचायतों को अपने संसाधनों से आत्मनिर्भर बनना चाहिए। इस वर्ष भारत सरकार के 15वें वित्त आयोग के अंतर्गत किये गये वित्तीय प्रावधानों को व्यय करने का अंतिम वर्ष है। इसके अलावा राज्य का वित्त, स्टॉम्प ड्यूटी की राशि, गौण खनिज की राशि सहित अन्य स्त्रोतों से भी पंचायतों को आय होती है। इस राशि का कार्य योजना बनाकर उपयोग किया जाए। इस वर्ष बजट में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के लिये वित्तीय प्रावधानों में वृद्धि हुई है।

ई-पंचायत को दृष्टिगत रखते हुए बनाए जायेंगे पंचायत भवन- मंत्री श्री पटेल ने कहा कि पंचायत भवन ई-पंचायत को दृष्टिगत रखते हुए बनाए जायेंगे। पंचायत भवन इस प्रकार बनाया जाए जो कि आगामी 40 वर्ष तक उपयोगी हो। भविष्य में उन्हें दो मंजिला, तीन मंजिला बनाया जा सकेगा। इसी प्रकार सभी पंचायतों में बहुउपयोगी सामुदायिक भवन भी बनाये जायेंगे। उन्होंने उपस्थित पंच-सरपंचों से कहा कि वह अपने जिलों में पंच-सरपंचों, जनपद सदस्यों का सम्मेलन करें और नागरिकों की समस्याएं सुने। उन्होंने कहा कि हम सभी को टीम भावना से कार्य करना होगा। आपस में समन्वय से काम की गति बढ़ेगी, बेहतर काम होगा।

रोपित पौधों को बच्चों के समान बड़े होने तक संरक्षण दें- जल गंगा संवर्धन अभियान का उल्लेख करते हुए मंत्री श्री पटेल ने कहा कि अभियान के तहत छोटी-छोटी नदियों को जोड़ें, जिससे नदी नालों में पानी मिलेगा। हमें घर में, खेतों के लिये जल की आवश्यकता है। हमें जल संरक्षण के लिये प्रयास करने होंगे। वृक्ष हम आने वाली पीढ़ियों के लिए लगाते हैं। वृक्ष छाया भी देते हैं, फल भी देते हैं और पानी भी एकत्रित करते हैं। पर्यावरण संरक्षण, पौध-रोपण, जल संरक्षण केवल सरकार का काम नहीं है, यह हम सभी की जिम्मेदारी है। केवल पौध-रोपण ही न करें, बल्कि रोपित किए गए पौधे वृक्ष का आकार लें यह भी सुनिश्चित करें। वृक्ष हमारे जीवन के लिये आवश्यक हैं, इनके लिये अपना योगदान दें।

उत्कृष्ट कार्य करने वाली ग्राम पंचायतों के पंच-सरपंच हुए सम्मानित

मंत्री श्री पटेल ने जिले की ऐसी ग्राम पंचायतें जहां विभिन्न अभियानों तथा योजनाओं के क्रियान्वयन में उत्कृष्ट कार्य किया है, उन ग्राम पंचायतों के सरपंच तथा पंचों को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम स्थल पर स्वास्थ्य विभाग, महिला बाल विकास विभाग, स्व-सहायता समूहों के साथ ही ई-केवायसी कार्य के लिये स्टॉल भी लगाए गए।

राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस कार्यक्रम का देखा लाइव प्रसारण

कार्यक्रम स्थल पर बिहार के मधुबनी में आयोजित राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस कार्यक्रम तथा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के उद्बोधन का लाईव प्रसारण वर्चुअली देखा गया। मंत्री श्री पटेल सहित सभी अतिथियों, अधिकारियों, सरपंचों तथा पंचों द्वारा दो मिनिट का मौन धारण कर जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले में मृतकों को श्रद्धांजलि दी।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने शहडोल के गंधिया ग्राम में भगवान श्रीराम के विश्राम स्थल का दर्शन और पूजन किया

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री एवं शहडोल जिले के प्रभारी श्री राजेन्द्र शुक्ल ने मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के वनवास के दौरान विश्राम स्थल जयसिंहनगर जनपद पंचायत के अंतर्गत ग्राम गंधिया (सीतामढ़ी) में पहुंचकर दर्शन किये। उन्होंने पूजा अर्चना कर प्रदेश के विकास एवं प्रदेशवासियों की खुशहाली की कामना की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कलेक्टर डॉ. केदार सिंह को गंधिया ग्राम को तीर्थ स्थल के रूप में विकसित

करने तथा धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कराने के निर्देश दिए। ग्रामीणों ने बताया कि भगवान श्रीराम वनवास के दौरान उमरिया जिले के (सीतामढ़ी) के दशरथ घाट होते हुए गंधिया ग्राम पहुंचे थें। जहां उन्होंने 11 दिन विश्राम किया था।

कलेक्टर डॉ. केदार सिंह ने बताया कि मंदिर के पास प्राचीन तालाब है जिसे जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत विकसित करने की कार्ययोजना तैयार की गई है जिसपर कार्यवाही की जायेगी। इस संबंध में ग्रामीणों के साथ जल चौपाल का आयोजन कर कार्य योजना तैयार की गई है। कलेक्टर श्री सिंह ने बताया कि गंधिया ग्राम को तीर्थ स्थल के रूप में विकसित करने तथा आमजन के श्रद्धा का केंद्र बनाने के लिये सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी शीघ्र किया जाएगा। इसके अतिरिक्त मंदिर परिसर को व्यवस्थित स्वरूप दिया जाएगा। विधायक श्री शरद कोल, पुलिस अधीक्षक श्री रामजी श्रीवास्तव, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री नरेंद्र सिंह धुर्वे सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

जल संरक्षण के जन-आंदोलन से जल-समृद्ध बनेगा मध्यप्रदेश : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

शहडोल की ग्राम पंचायत टिहकी में जल गंगा संवर्धन अभियान की जन-चौपाल में हुए शामिल

भोपाल(नप्र)। उप मुख्यमंत्री एवं शहडोल जिले के प्रभारी श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि मध्यप्रदेश सरकार जल-संरक्षण एवं संवर्धन को जन-आंदोलन के रूप में विकसित कर 'जल-समृद्ध मध्यप्रदेश' बनाने की दिशा में सतत कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि 'जल-गंगा संवर्धन अभियान' अब प्रदेश के हर गांव, हर परिवार और हर नागरिक की सहभागिता वाला जन-अभियान बन गया है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल शहडोल जिले की जनपद पंचायत जयसिंह नगर अंतर्गत ग्राम पंचायत टिहकी में आयोजित जन-चौपाल को संबोधित कर रहे थे।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि वर्षा जल का संरक्षण और संवर्धन आज समय की मांग है। प्राकृतिक संतुलन के लिए आवश्यक है। प्रदेश सरकार ने जल-गंगा संवर्धन अभियान की शुरुआत की है, ताकि हम जल को संग्रहित करें, उसका संरक्षण करें और जल-स्त्रोतों को पुनर्जीवित करें। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि धरती की कोख - यानी भूमिगत जल स्त्रोतों को भी पुनर्भरण (रिचार्ज) की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा कि यदि हम केवल निकालते रहेंगे और वापस नहीं लौटाएँगे, तो भविष्य में अगली पीढ़ी को जल संकट का सामना करना पड़ेगा।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने आमजन से आह्वान किया कि छोटे-छोटे प्रयासों से बड़े बदलाव लाने का संकल्प लें। उन्होंने कहा कि पानी केवल कृषि और पेयजल का साधन नहीं है, बल्कि यह संस्कृति, अर्थव्यवस्था और स्वास्थ्य से भी सीधा जुड़ा हुआ है। उन्होंने ग्रामवासियों से आग्रह किया कि जल संरक्षण को

सांस्कृतिक जिम्मेदारी और सामाजिक चेतना का हिस्सा बनाएं। प्रत्येक विद्यालय, ग्राम सभा, स्व-सहायता समूह और युवा मंडल इस कार्य में सहभागी बनें। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश इस दिशा में अग्रणी बनकर उभर रहा है।

निरोगी काया अभियान में उत्कृष्ट कार्य पर प्रशासन एवं स्वास्थ्य विभाग को दी बधाई- उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी तथा मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अगुवाई में देश एवं प्रदेश में निरंतर विकास के कार्य किए जा रहे है, महिलाएं सशक्त हो रही हैं, सामाजिक कार्यों में उनकी सहभागिता बढ़ी है। उन्होंने कहा कि चारों तरफ पुल-पुलियों, सड़कों का निर्माण होने से व्यापार के अवसर बढ़ रहें हैं, लोगों को रोजगार मिल रहा है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि जीवन का पहला सुख निरोगी काया है, सभी लोग निरोगी रहें, इसके लिए सरकार निरोगी काया अभियान चलाकर घर-घर सर्वे कराकर रोगियों की पहचान कर रही है। इससे आमजन को गंभीर बीमारियों से बचाया जा सके। शहडोल जिला इस अभियान में तीसरे स्थान पर है, जिसके लिए जिला प्रशासन तथा सी. एम. एच. ओ. डॉ. राजेश मिश्रा को बधाई दी।

श्रमदान, कर दिया जल संरक्षण का संदेश- उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने ग्राम पंचायत टिहकी में राम सागर बड़ा तालाब जीर्णोधार कार्य का शुभारंभ किया तथा श्रमदान कर जल संरक्षण का संदेश दिया।

विधायक ब्यौहारी श्री शरद कोल ने कहा कि पहले गांव के तालाब, कुआं, बावड़ी, में कभी पानी की कमी नहीं होती थी। सभी जगह साल भर पानी भरपूर मात्रा में रहता था, लेकिन अब इस दौर में कुआं, तालाब एवं बावड़ी का पानी गर्मी का सीजन आते ही सूख जाता है।झउन्होंने कहा कि हमें आसपास के तालाब, कुआं, बावड़ी सहित अन्य जल संरचनाओं को बचाना होगा। उनकी साफ सफाई कर उनका जीर्णोधार करना होगा। कलेक्टर डॉ.केदार सिंह ने जल गंगा संवर्धन अभियान के प्रगति की जानकारी देते हुए बताया कि जिले में 4 हजार से अधिक जल संरचनाओं का चयन किया गया है, एक तिहाई कार्य प्रारंभ किए जा चुके हैं, लगातार जल चौपाल लगाकर लोगों को सहभागी बनाया जा रहा है।

अवैध कॉलोनी का निर्माण करने वालों पर करें कार्रवाई : राज्यमंत्री श्रीमती गौर

श्रीमती गौर ने गोविंदपुरा क्षेत्र के वार्ड-56 में भ्रमण कर सुनीं नागरिकों की समस्याएं

भोपाल (नप्र)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने गुरुवार को वार्ड 56 में क्षेत्रवासियों से जनहित से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की और एसडीएम को अवैध कॉलोनाइजर्स के विरुद्ध कार्रवाई करने के निर्देश दिए। भ्रमण के दौरान आनंद बिहार कालोनी और नरेंद्र नगर बरखेड़ा पठानी की महिलाओं ने राज्यमंत्री श्रीमती गौर को बताया कि बिल्डर ने प्लॉट बेच दिए। पानी, बिजली और नाली जैसी कोई भी सुविधा उपलब्ध नहीं कराई।

स्?थानीय नागरिकों ने बताया कि एक पेट्रोल पंप संचालक ने अटल चौराहे से 80 फीट रोड पर अतिक्रमण कर आम रास्ता बंद कर दिया है। रहवासियों ने वैकल्पिक मार्ग देने की मांग की। स्थानीय नागरिकों ने अधूरे पड़े सुलभ शौचालय का निर्माण पूरा कराने की मांग की। माता मंदिर बरखेड़ा पठानी में महिलाओं ने

नाली की सफाई नहीं होने, कचरा नहीं उठाने की शिकायत की। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने अधिकारियों को फटकार लगाते हुए लापरवाही करने वाले कर्मचारियों ने कार्य प्रणाली में सुधार नहीं किया, तो उनके विरुद्ध कार्रवाई की जायेगी। साकेत नगर सेक्टर-3डी नुपुर बाल उधान के नागरिकों ने पार्क में असामाजिक तत्वों के कब्जा कर अवैध कॉमर्शियल गतिविधियां संचालित किये जाने की शिकायत की। यहां जर्जर हो चुकी सीवेज लाइनों से सड़कों पर गंदा पानी बहने की बात भी उठाई गई। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने बताया कि नई पाइप लाइन का निर्माण अमृत फेज-2 के तहत शीघ्र कराया जायेगा।

राज्यमंत्री श्रीमती गौर के साथ पार्षद श्री नीरज सिंह, प्रताप सिंह बेस, लीलाधर मालवीय, तुलाराम नामदेव, सुनील दबे सहित सैकड़ों की संख्या में रहवासी, कार्यकर्ता और विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

॥ मंदिरम् ॥

92

जगदीश मंदिर, उदयपुर, राजस्थान

जगदीश मंदिर, जिसे जगन्नाथ राय मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, राजस्थान के उदयपुर के केंद्र में स्थित भगवान विष्णु को समर्पित एक बड़ा हिंदू मंदिर है। यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है, जिन्हें ब्रह्मांड के संरक्षक के रूप में भी जाना जाता है। यह मंदिर पूरे उदयपुर में सबसे बड़ा माना जाता है। मंदिर का प्रवेश द्वार सिटी पैलेस के बारा पोल से देखा जा सकता है, जो 150 मीटर दूर है। यह विशाल मंदिर इंडो-आर्यन स्थापत्य शैली में बनाया गया है। यह मंदिर तीन मंजिल ऊंचा है और वास्तुकला में कला का एक नमूना है। यह एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है जिसे पहले जगन्नाथ राय मंदिर के नाम से जाना जाता था लेकिन अब इसे जगदीश जी मंदिर के नाम से जाना जाता है। अपने अद्वितीय स्थान, सुंदरता और इतिहास के कारण, मंदिर हाल के दशकों में एक महत्वपूर्ण स्मारक बन गया है।

पहलगाम हमले में मारे गए सुशील को दी अंतिम विदाई

इंदौर में पत्नी ताबूत से लिपटकर रोई, बुआ बोलीं-अब किसका इंतजार करूंगी मैं

इंदौर (नप्र)। पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए सुशील नथानियल को ईसाई रीति-रिवाज से अंतिम विदाई दी गई। पहलगाम आतंकी हमले में जान गंवाने वाले इंदौर के सुशील नथानियल का अंतिम संस्कार जूनी इंदौर कब्रिस्तान में ईसाई रीति रिवाज से किया गया। यहां परिजन, रिश्तेदार और दोस्तों के अलावा मंत्री तुलसी सिलावट, कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी, जिला अध्यक्ष सदाशिव यादव समेत कई लोग मौजूद रहे।

इससे पहले सुशील की अंतिम यात्रा वीणा नगर स्थित उनके घर बी68 से शुरू हुई। पार्थिव शरीर विशेष वाहन में नंदा नगर चर्च पहुंचाया गया। यहां प्रार्थना के बाद कब्रिस्तान के लिए रवाना हुआ था। अंतिम यात्रा से पहले सुशील के घर पर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। पत्नी जेनिफर उनके ताबूत से लिपटकर रोईं। पिता बदहवास नजर आए। सुशील की छोटी बुआ इंदु डावर की आंखों से आंसू रुक नहीं रहे थे। कांपती आवाज में बस एक ही सवाल बार-बार पूछ रही थीं, अब किसका इंतजार करूंगी मैं, बता मुझे।ये दृश्य देखकर मौके पर मौजूद हर किसी की आंखें नम हो गईं। बेटे ऑगस्टिन ने बताया कि आतंकवादी कैमरे लगाकर आए थे और सेल्फी ले रहे थे। बेटी आकांक्षा पिता की याद में गुमसुम नजर आई।

जीतू पटवारी बोले- पूरा देश सरकार के साथ- कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा- दुनिया में भारत माता को चुनौती देने वाला कोई प्रहार होगा तो सेना और सरकार उसे नेस्तानाबूद करेगी। पूरा देश एकजुट है, सरकार के साथ है। यह घटना भारत के खिलाफ बहुत बड़ा षड्यंत्र है। यह षड्यंत्र बहुत बड़ा था, भारत विरोधी ताकतों का था।

विजयवर्गीय बोले- पाकिस्तान में आतंकवाद बढ़ा, पड़ोसी देशों में खतरा- मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा- आतंकी हमले पर पूरे विश्व ने चिंता प्रकट की है। जिस प्रकार पाकिस्तान में आतंकवाद बढ़ रहा है...उससे पड़ोसी देशों में खतरा पैदा हुआ है, वह गंभीर चिंता का विषय है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस पर अच्छा और कड़ा रुख अपनाया है। देश भी यही चाहता है कि ऐसा ही कड़ा रुख अपनाया जाए।

आतंकी हमले की कायराना हरकत करने वालों को नहीं छोड़ेगी हमारी सेना : सीएम यादव

पहलगाम में हुए आतंकी हमले में जान गंवाने वाले सुशील नथानियल का पार्थिव देश बुधवार रात सवा आठ बजे इंदौर एयरपोर्ट पर पहुंचा। यहां पर मुख्यमंत्री मोहन यादव और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बीडी शर्मा सहित अन्य मंत्रियों ने पुष्पांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री ने घटना के दौरान साथ में मौजूद रहे पत्नी और बच्चों को सांत्वना देते हुए कहा कि सरकार उनके साथ है। मुख्यमंत्री यादव ने एयरपोर्ट पर कहा कि घटना में दिवंगत हुए मध्यप्रदेश इंदौर के सुशीलजी की पार्थिव देह पर राज्य सरकार की और से नमन करने इंदौर आए हैं। उन्होने राबर्ट वाड्रा के बयान की निंदा करते हुए कहा कि वाड्रा का बयान बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसे समय में इस तरह की बात करना गंदी मानसिकता का परिणाम है। उनकी पार्टी हमेशा बहुसंख्यक समाज को लजित करती है, मैं उम्मीद करता हूं की वह माफी मांगेंगे। कल की घटना के बाद पूरा कश्मीर और देश एक साथ खड़ा हुआ, लेकिन कांगेस ने हिंदू-मुसलमान का तरीका लगाया वह गलत है।

हम औद्योगिक गतिविधियों से अंचलों में विकास की गंगा बहाएंगे : डॉ. यादव

2100 करोड़ की परियोजना से 3 लाख से अधिक रोजगार के अवसर होंगे सृजित

प्रधानमंत्री का माना मुख्यमंत्री ने धार में पीएम मित्रा पार्क की सौगात के लिए आभार

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश के जनजातीय बहुल धार जिले को केन्द्र सरकार से प्रधानमंत्री मित्रा पार्क की सौगात मिलना बड़ी उपलब्धि है। इससे युवाओं के लिए 3 लाख से अधिक रोजगार के अवसर पैदा होंगे। राज्य सरकार औद्योगीकरण की दिशा में लगातार आगे बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि हमने 2025 को उद्योग और रोजगार वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पीएम मित्रा पार्क के विकास में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मार्गदर्शन और सहयोग प्रदेश सरकार को मिल रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने केंद्र की ओर से 2100 करोड़ रुपए की राशि स्वीकृत करने पर प्रधानमंत्री श्री मोदी का आभार माना है। प्रदेश सरकार औद्योगिक केन्द्रों के विस्तार और पीएम मित्रा पार्क के शीघ्र लोकार्पण के लिए मिशन मोड में कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के मार्गदर्शन और सहयोग से

हम प्रदेश में उद्योगों से विकास की गंगा बहाएंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरुवार को मीडिया के लिए जारी संदेश में कहा कि धार का यह पीएम मित्रा पार्क प्रदेश में औद्योगिक संरचना का बड़ा केंद्र बनेगा। इससे वस्त्र उद्योग सहित अन्य उद्योग धंधों को आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त होंगे। वस्त्र उद्योग, मध्यप्रदेश की पहचान रहा है, केन्द्र सरकार के सहयोग से राज्य के जनजातीय अंचलों सहित प्रदेश में कपास की खेती को प्रोत्साहन मिलेगा और हम कॉटन को पुनर्स्थापित कर पाएंगे।

27 को इंदौर में आईटी और 3 मई को मंदसौर में होगा एग्रीकल्चर कॉन्क्लेव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश के युवाओं की आत्मनिर्भरता और रोजगार के लिए राज्य सरकार सभी क्षेत्रों में कार्य कर रही है। उद्योगों में निवेश प्रोत्साहन के लिए आगामी 27 अप्रैल को इंदौर में आईटी इंडस्ट्री-कॉन्क्लेव और 3 मई को एग्रीकल्चर कॉन्क्लेव मंदसौर में आयोजित की जा रही है। मालवांचल सहित प्रदेश में कृषि और किसानों की समृद्धि के लिए कल्याणकारी योजनाएं संचालित हैं। उन्नत फसलों और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं। राज्य सरकार किसानों को सोलर पंप प्रदान कर बिजली के बिल से बोझ से उन्हें मुक्त करने के लिए भी कार्य कर रही है। किसान खेती की नई तकनीक की जानकारी प्राप्त करें और नवाचारों से प्रेरणा लें, इस उद्देश्य से कृषि पर केन्द्रित कॉन्क्लेव आयोजित किया जा रहा है।

प्रदेशवासियों को दी पंचायती राज दिवस की शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेशवासियों को पंचायती राज दिवस की शुभकामनाएं एवं बधाई दी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में देश की समस्त पंचायतों को समृद्ध कर गांवों का पुनर्विकास किया जा रहा है, स्थानीय निकायों की मजबूती के लिए यह बड़ा कदम है। गांवों को स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य से पंचायतों को सशक्त किया जा रहा है। इससे पंच-सरपंच और जनपद व जिला पंचायत स्तर के प्रतिनिधि बेहतर तरीके से अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरुवार को मीडिया में जारी संदेश में कहा कि भारत में प्राचीन काल से ही पंचायत व्यवस्था महत्वपूर्ण रही है। गांव की संस्कृति को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार घर-घर गोकुल बनाने की दिशा में अग्रसर है। इसके लिए वृंदावन योजना तैयार की गई है, सरकार प्रत्येक विकासखंड में एक गांव को वृंदावन ग्राम के रूप में विकसित करेगी। उन्होंने कहा कि पंचायतों, गांवों और किसानों के कल्याण के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं।

मालेगांव केस में एनआईए ने कोर्ट में पेश की दलीलें

प्रज्ञा ठाकुर सहित 7 आरोपियों के खिलाफ 8 मई को आएगा फैसला

भोपाल (नप्र)। साल 2008 के मालेगांव बम धमाके के आरोपों से घिरी भोपाल से बीजेपी की सांसद रहीं प्रज्ञा सिंह ठाकुर सहित सात आरोपियों को एनआईए (नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी) ने राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने मुंबई के स्पेशल कोर्ट से 2008 के मालेगांव बम विस्फोट मामले में सभी सात आरोपियों पर गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम की धारा 16 के तहत सजा देने का अनुरोध किया है।

एनआईए की मांग-अपराध के अनुपात में उचित सजा दी जाए- एनआईए ने अपनी लिखित दलीलों में ये उल्लेख किया है कि जिस तरह का अपराध किया गया था। उसके अनुपात में आरोपियों को सजा दी जाए। इस केस में प्रज्ञा ठाकुर के खिलाफ (यूपी(पी) के सेक्शन 16 और 18 और आईपीसी की धारा 120 बी, 302, 307, 324, 326 और 427 के मामले दर्ज किए गए थे।

म.प्र.कांग्रेस ने बनाया 40 दिन का कैम्पेन कैलेंडर

ग्वालियर में संविधान बचाओ रैली से होगी शुरुआत, जिलाध्यक्षों को देंगे ट्रेनिंग

भोपाल (नप्र)। चुनावों में लगातार हार के बाद अब कांग्रेस अपने कैडर को मजबूत करने के लिए ट्रेनिंग प्रोग्राम शुरू करने जा रही है। 9 अप्रैल को अहमदाबाद अधिवेशन के बाद अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने एमपी कांग्रेस को कैडर ट्रेनिंग के लिए गाइडलाइन भेजी है। इसमें जिले की टीम को ट्रेंड करने पर जोर दिया गया है। इसके साथ ही कांग्रेस ने 40 दिन का कैम्पेन कैलेंडर बनाया है।

जिला अध्यक्षों को देंगे ट्रेनिंग

नई गाइडलाइन और कैम्पेन कैलेंडर का फोकस कांग्रेस के संगठनात्मक नेतृत्व के ओरिएंटेशन और कैडर को वैचारिक रूप से तैयार करने पर रहेगा। सभी जिला अध्यक्षों की ट्रेनिंग के लिए पीसीसी द्वारा ट्रेनिंग सेशन फाइनल कर ट्रेनिंग दी जाएगी। ये ट्रेनिंग वर्चुअल या व्यक्तिगत रूप से देने पर अभी फैसला होना बाकी है। ट्रेनिंग के लिए अहमदाबाद अधिवेशन में पारित हुए प्रस्ताव के साथ ही एक प्रजेंटेशन भी एआईसीसी की ओर से भेजा जाएगा।

40 दिन के कैम्पेन का कैलेंडर फाइनल- कांग्रेस ने संविधान बचाओ अभियान के तहत 40 दिन के कार्यक्रम का कैलेंडर बनाया है। मई के महीने में लगातार कार्यक्रम चलेंगे।

कश्मीर का टूर कैंसिल कर रहे मप्र के लोग

भोपाल में बुकिंग कराने कोई नहीं आ रहा; इंदौर, उज्जैन-ग्वालियर में भी ऐसे ही हाल

भोपाल (नप्र)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 27 पर्यटकों की मौत हो गई। इस घटना के बाद भोपाल समेत मध्यप्रदेश से गर्मी की छुट्टी में घूमने के लिए कश्मीर जाने वाले लोग अपने ट्रिप कैंसिल कर रहे हैं। भोपाल में कश्मीर के टूर की बुकिंग कराने कोई नहीं पहुंचा। इंदौर, उज्जैन, जबलपुर-ग्वालियर में भी ऐसी ही स्थिति रही। यहां 200 से ज्यादा बुकिंग कैंसिल हो गईं। टूरिस्ट सिर्फ अप्रैल ही नहीं, मई और जून की बुकिंग भी कैंसिल कर रहे हैं। ज्यादातर लोगों ने 1 मई के बाद कश्मीर घूमने का प्लान बनाया था, क्योंकि डेढ़ महीने के लिए बच्चों के स्कूल की छुट्टियां लग रही थी। वे कश्मीर ट्रिप कैंसिल करने के बाद अब हिमाचल प्रदेश या उत्तराखंड घूमने के लिए पूछताछ कर रहे हैं। भोपाल के विजय सिंह ने कहा- मई में बच्चों की स्कूल की छुट्टी लग रही थी इसलिए परिवार समेत वैष्णोदेवी और श्रीनगर जाने का प्लान था, जो कैंसिल कर दिया है। अब नैनीताल जाने का प्लान बना रहे हैं।

कश्मीर न जाते हुए हिमाचल-उत्तराखंड का प्लान- भोपाल में ट्रेवल्स संचालक एसके पाली बताते हैं- भोपाल से कश्मीर, हिमाचल प्रदेश या उत्तराखंड घूमने जाने वाले टूरिस्ट दिल्ली या ग्वालियर तक फोर व्हीलर से जाते हैं। यदि बड़ी फैमिली है तो ट्रेवलर जैसी गाड़ियों को सीधे वहां तक ले जाते हैं। पहलगाम, गुलमर्ग, श्रीनगर, वैष्णोदेवी के लिए भी बुकिंग होती है, लेकिन पहलगाम में आतंकी हमले के बाद वे लोग चिंतित हैं, जो 1 मई के बाद घूमने जाने वाले हैं।

ट्रेवल्स संचालक बोले- कश्मीर के पर्यटक कम होंगे- भोपाल के ही ट्रेवल्स संचालक योगेंद्र सिंह गुड्डू चौहान का कहना है- टूरिस्ट प्लेस पहलगाम में आतंकी हमले से सिर्फ वहां के होटल इंडस्ट्री या अन्य कारोबार पर ही नहीं, मध्यप्रदेश की ट्रेवल्स इंडस्ट्री पर भी असर पड़ेगा। हर साल मई में स्कूलों की छुट्टी लगने पर लोग फैमिली समेत कश्मीर जाते हैं। इनमें से ज्यादातर फोर व्हीलर या बसों से जाते हैं। आने वाले दिनों में इनकी बुकिंग घट जाएगी।

अब कश्मीर टूरिज्म को प्रमोट नहीं करेंगे

भोपाल के आईएसबीटी स्थित ट्रेवल्स कंपनी के संचालक विजय श्रीवास्तव ने बताया- भोपाल के दो टूरिस्ट बुधवार को बस से ग्वालियर होते हुए कश्मीर जाने वाले थे, लेकिन उन्होंने अपने बुकिंग कैंसिल करा दी। देवास के प्राइमेक्स ट्रेवल्स के पल्लव सिंह ठाकुर ने कहा कि मई में 25 हजार रुपए में कश्मीर टूर करवा रहे थे। जिसमें 5 नाइट का पैकेज था। श्रीनगर, गुलमर्ग, पहलगाम में नाइट स्टे भी रखा था लेकिन आतंकी हमले के बाद यह टूर कैंसिल कर दिया है। इसमें देवास के टूरिस्ट भी शामिल थे। हम अब कश्मीर टूरिज्म को प्रमोट नहीं करेंगे।

इंदौर: 50 लोगों ने कैंसिल किए टूर- पहलगाम में टूरिस्ट को निशाना बनाकर हत्या करने के बाद से इंदौर से कश्मीर जाने वाले पर्यटकों ने टूर पैकेज कैंसिल करा दिए हैं। इंदौर के ट्रैवल एजेंट्स से मिली जानकारी के अनुसार, 22 अप्रैल को आतंकी घटना के बाद से बुधवार शाम तक 50 से ज्यादा लोगों ने टूर कैंसिल कराए हैं। 20 से ज्यादा ने रिशेड्यूल किए हैं।

जेपी में फिर शुरू हुई आउटसोर्स कर्मचारियों की हड़ताल

भोपाल (नप्र)। जेपी अस्पताल में चार माह से वेतन ना मिलने से नाराज आउटसोर्स कर्मचारी हड़ताल कर रहे हैं। एक सप्ताह के अंदर कर्मचारियों के हड़ताल पर जाने का यह तीसरा मौका है। दो बार अधिकारियों के आश्वासन पर कर्मचारियों ने हड़ताल स्थगित की थी। लेकिन बुधवार रात तक वेतन ना मिलने के कारण गुरुवार को फिर कर्मचारी काम बंद कर परिसर में प्रदर्शन कर रहे हैं। जिसके कारण पूरे परिसर में अव्यवस्था और गंदगी फैली हुई है।

- चार महीने से नहीं मिला वेतन, परिसर में फैली अव्यवस्था और गंदगी

बच्चों को अस्पताल में नहीं मिल रहा दूध- पीआईसीयू और बच्चा वार्ड में भर्ती बच्चों को गर्म पानी और दूध देने के लिए परिजन अस्पताल के बाहर स्थित चाय की दुकानों पर निर्भर हैं। एसएनसीयू में आया के पद पर कार्यरत सरोज ने बताया कि वे मशीन लगाने, भर्ती बच्चों को दूध या पानी गर्म करके देने, नर्स व डॉक्टर की सहायता करने जैसे कई कार्य करती हैं। अब कर्मचारियों के हड़ताल पर जाने से यह सभी कार्य प्रभावित हो रहे हैं।

कर्मचारी मजबूरन कर रहे हड़ताल- ज्योति पंवार ने बताया कि 4 माह से सैलरी नहीं मिली है। पीएफ भी लंबे समय से जमा नहीं हो रहा है। कई बार इस समस्या को लेकर अस्पताल प्रबंधन से लेकर विभाग के आला अधिकारियों तक से गुहार लगा चुके हैं। हमारी बात कोई नहीं सुन रहा है। इसलिए सभी कर्मचारी मजबूरन हड़ताल कर रहे हैं। जिससे पूरे परिसर में अव्यवस्थाएं फैल रहीं है। सफाई ना होने से वार्ड, ओपीडी, पंजीयन काउंटर व जांच कक्ष में गंदगी फैली हुई है। अस्पताल के शौचालय तक गंदे पड़े हैं।

सीएमएचओ ने कहा प्रदर्शन करने वाले बाहरी लोग

प्रदर्शन के दौरान सीएमएचओ प्रभाकर तिवारी जेपी अस्पताल में स्थित सिविल सर्जन कक्ष पहुंचे। इस दौरान उन्होंने कहा कि यह प्रदर्शन बाहरी लोग कर रहे हैं। इनसे अस्पताल के सभी कर्मचारी अपनी ड्यूटी पर हैं। वहीं, सिविल सर्जन डॉ. राकेश श्रीवास्तव ने बताया कि हड़ताल कर रहे कर्मचारियों को वेतन जल्द मिल जाएगा। आधे कर्मचारियों का वेतन आ चुका है और उन्होंने काम पर लौटना भी शुरू कर दिया है।

शादी का झांसा देकर विवाहिता से दुष्कर्म

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल के पिपलानी इलाके में शादी का झांसा देकर दुष्कर्म का मामला सामने आया है। यहां एक युवक ने शादीशुदा महिला को शादी का झांसा देकर उसके साथ दुष्कर्म किया।

आरोपी और पीड़िता की मुलाकात इंस्टाग्राम के जरिए हुई थी। दोनों के बीच लंबे समय तक बातचीत होती रही। 18 जनवरी 2023 को दोनों की पहली मुलाकात हुई। थाना प्रभारी अनुराग लाल के अनुसार युवक ने महिला को भरोसा दिलाया कि वह उससे विवाह करेगा। इसी विश्वास के चलते दोनों के बीच शारीरिक संबंध बने। बाद में आरोपी युवक रजक शादी की बात से मुकर गया।

इसके बाद पीड़िता ने पिपलानी थाने में युवक के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने दुष्कर्म समेत अन्य धाराओं में मामला दर्ज कर लिया है। फिलहाल युवक फरार है।